सफलता के सोपान

एक अनुकरणीय अभियान-(3)

महिला सशक्तीकरण विशेषाँक

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान

भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, पोस्ट-सीतापुर, चित्रकूट-210204 (उ.प्र.), दूरभाष : *05198*-**224332**

E-mail : absschitrakoot@rediffimail.com ´ : absss@sancharnet.in

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठसंख्या
१	आभार	२
२	पृष्ठभूमि	३
३	मीरा को मिला जीविका का सही आधार	
४		
४	जन हितैषी कार्यों ने बनाया रश्मि को प्रधान	४
५	जब श्रमदान ने असंभव को संभव कर दिखलाया	५
६	आत्मनिर्भरता की दिशा में एक कदम	६
७	आवश्यकता है अन्य महिलाओं में मंजूदेवी जैसी...	६
८	महिलाओं की प्रेरणास्रोत बनी सरोज	७
९	रजनी देवी के आत्मविश्वास ने दिखाया जीवन...	८
१०	गाढ़े समय में समूह के सहयोग से आर्थिक...	९
११	अब हाथ नहीं फैलाते सूदखोरों के आगे	९
१२	आज लक्ष्मी को मनिहारी का व्यवसाय रास...	१०
१३	आत्मविश्वास ने एक सफल ब्यवसायी बनाया	१०
१४	स्वयं सहायता समूह के सहयोग से आर्थिक...	११
१५	स्वयं सहायता समूह ने रोजगार के साथ-साथ...	११
१६	अब रोटी के लाले नहीं पड़ते पावर्ती के घर	१२
१७	जब मनवसिया को मिला अधिकार	१२
१८	रानीदेवी की सूजबूझ ने परिवार को आर्थिक...	१३
१९	एक बेसहारा को जीने का अधिकार मिला	१३
२०	गीता देवी की लगन एवं मेहनत ने जीवन...	१४
२१	समूह की पहल से समय के सदुपयोग का मार्ग...	१४
२२	राजकुमारी आत्मनिर्भरता का अदाहरण बनी	१५
२३	समूह के सहयोग से संभल गई गुदरी की दूकान	१५
२४	आज मुन्नी देवी रोजी-रोटी के लिए किसी की...	१६
२५	समूह के सहयोग से गिट्टी तोड़ने से मुक्ति मिली	१६
२६	आर्थिक दिशा की ओर एक पग बढ़ाती सखियादेवी	१७
२७	सामूहिक पहल ने जीवन जीने का मार्ग दिखाया	१८
२८	मजदूरी से अपना छोटा-मोटा व्यवसाय भला	१९
२९	मजदूर से मालिक बनी शीलरानी सहरिया	२०
३०	खदानों की जिल्लत भरी जिन्दगी से मुक्ति मिली	२१
३१	स्वरोजगार के साथ गाँव की समस्याओं को...	२२
३२	सुनीता ने बकरी पालन को जीविका का ...	२२
३३	गौरिया को सब्जी का धन्धा रास आने लगा	२३
३४	राजेश का संघर्ष	२३
३५	कस्तूरीबाई के समूह ने छोड़ी सामन्तो की ...	२४
३६	नवयुवकों के प्रेरणाकेन्द्र गब्बर	२५
३७	बढ़ने लगी है कीर्ति	२५
३८	पलायन से मुक्ति मिली ममता के परिवार को	२६
३९	कुछ करने की ललक ने मार्ग दिखाया	२७
४०	सरोज को मिला एक नया रास्ता	२७
४१	पत्नी की सलाह से पति को परदेश जाने से...	२८
४२	बीमारी ने किया प्रेमा के सपने चकनाचूर	२८
४३	स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ाती महिलायें	२९
४४	शंकरिया की कोशिश है कि उसके पति...	२९
४५	पहले नमक, माचिस खरीदने के लिए हलाकान...	३०
४६	स्वरोजगार से जुड़ती महिलाएं	३०
४७	स्वरोजगार के साथ-साथ पंचायत के दायित्वों...	३१
४८	काम के लिए दर-दर भटकने से मुक्ति मिली	३२
४९	समूह के सहयोग से दूसरों की गुलामी से...	३२
५०	पंचायतों में अभिशाप बना अनुसूचित जनजाति...	३३
५१	लगन से जीविका का आधार मिला	३४
५२	गुलाबरानी सब्जी व्यवसाय को सूत कातने से...	३४
५३	मजदूरी से स्वयं का छोटा धन्धा भला	३५
५४	मनिहारी का व्यवसाय कर प्रेमवती सकून...	३५
५५	पाकोविस के प्रयास से पंचायतों में दाखिल हुए...	३६

सफलता के सोपान
एक अनुकरणीय अभियान -(3)
महिला सशक्तीकरण विशेषाँक

विकास, सामाजिक न्याय, कानून, समाज, पर्यावरण, योजना, अधिकार एवं कर्तव्य विषयक जागरूकता एवं साक्षरता श्रृंखला माला

क्रमांक -

संरक्षण, मार्गदर्शन
गोपाल भाई

संकलन एवं सम्पादन
विद्यासागर बाजपेयी

परिकल्पना
भागवत प्रसाद

सहयोग
गजेन्द्र सिंह,
ज्योत्सना, प्रियंका

शब्दांकन
कुमार अरविन्द

वर्ष - २००४-२००५

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान
भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, पो०-सीतापुर
जनपद-चित्रकूट (उ०प्र०) २१०२०४
द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित
दूरभाष : ०५१९८-२२४३३२
E-mail : abssschitrakoot@rediffmail-com
absss@sancharnet.in

अपनी बात

सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के हस्तक्षेप के परिणाम स्वरूप कुछ सफलताएँ सामने हैं। आत्म प्रशंसा का यद्धपि समाज में वातावरण अपने चरम पर है। इस स्थिति से बचने का प्रयास किया गया है। सफलताएँ जो हम आपको यहाँ समर्पित कर रहे हैं, उस समर्पण के पीछे विशुद्ध भाव यह है कि समाज परिवर्तन के लिए संघर्षरत् नये साथी हमारी प्रयास, प्रक्रिया जान-समझ कर और अधिक प्रेरित हो सकें। आप जानते हैं कि अन्तिम स्थिति में जीने की जिसकी वाध्यता है, वह एक बहुत बड़ा समुदाय है। ऐसे उपेक्षित समुदाय की आवाज़ बनना एक जोखिम भरा साहस का कार्य है। राजनीति करने वाले लोग या दल ग़रीब की पक्षधरता सघन रूप से कभी नहीं कर पाये हैं। केवल स्वैच्छिक प्रयास ही आशा की किरण हैं। ऐसे साहसी, समर्पित, साथियों को साधुवाद देते हुए आपको यह लघु पुस्तिका समर्पित है। मार्गदर्शन प्रार्थनीय है।

नागरिक समाज संस्थाओं के समग्र विकास के साथ-साथ तृणमूल कार्यकर्ताओं की क्षमता वृद्धि, नेतृत्व विकास, आजीविका एवं हकदारी तक निर्धनों की पहुँच एवं नियंत्रण, चुप्पी संस्कृति के विरुद्ध आवाज, स्वाभिमान एवं अधिकारों की प्राप्ति की दिशा में पैक्स कार्यक्रम वरदान सिद्ध हो रहा है। वंचित, शोषित, उपेक्षित, उत्पीडित, अभावग्रस्त एवं सामाजिक न्याय से कोसो दूर बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र के वंचितों, निर्धनों, दलितों एवं आदिवासियों तथा महिलाओं के बीच अवसर प्रदान करने हेतु पैक्स कार्यक्रम के प्रति आभार ।

पैक्स कार्यक्रम के अन्तर्गत अपनी सभी सहभागी संस्थाओं, जुझारू साथियों एवं संघर्षशील कार्यकर्ताओं के प्रति कोटिशः आभार। अपने जीवन एवं परिवार की चिन्ता न करते हुए भी समाज परिवर्तन, सामाजिक न्याय एवं समानतायुक्त समाज की दिशा में अहर्निश लगे हुए हैं।

अपनी सहभागी संस्थाओं एवं साथियों यथा (१) बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान, विकासखण्ड-मड़ावरा, जनपद-ललितपुर (२) परागीलाल विद्याधाम समिति, विकासखण्ड-नरैनी, जनपद-बाँदा, (३) कृष्णार्पित सेवाश्रम, विकासखण्ड-महुवा, जनपद-बाँदा, (४) अरुणोदय संस्थान, विकासखण्ड-जैतपुर, जनपद-महोबा, (५) दामिनी समिति, विकासखण्ड-कर्वी, (शिवरामपुर, भरतकूप) जनपद-चित्रकूट (६) पाठा कोल विकास समिति, विकासखण्ड-मानिकपुर, जनपद-चित्रकूट, (७) अन्त्योदय संस्थान, विकासखण्ड-मौदहा (सिसोलर), जनपद-हमीरपुर के सक्रिय, रचनात्मक प्रयोगो, प्रयासों को यहाँ प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है।

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट (उ०प्र०) ऐसे ही युवा, उदीयमान, महिला एवं दलित नेतृत्व के गढ़ने-मढ़ने का अकिचंन प्रयास कर रहा है। बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र में सामाजिक जागरूकता, जनान्दोलन, रचना एवं संघर्ष के साथ-साथ बुन्देलखण्ड के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, संवर्धन की दिशा में संस्थान सार्थक, स्थायित्व विकास की वकालत एवं प्रयोग की दिशा में समर्पित है।

विश्वास है सामाजिक, स्वैच्छिक जगत के युवा, उदीयमान साथी प्रेरणा ले सकेंगे।

साभार सहित

(भागवत प्रसाद)
निदेशक
अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट (उ.प्र.)

पृष्ठभूमि

प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर बुन्देलखण्ड सदियों से अपने गौरवशाली इतिहास के लिए जाना एवं माना जाता रहा है। इस क्षेत्र में जब-जब पुरुष ने अपने को निर्बल महसूश किया है, तब-तब क्षेत्र की कमान महिलाओं ने अपने सुकोमल हाथों में बड़ी मजबूती के साथ पकड़कर लक्ष्य को गन्तब्य स्थान तक पहुँचाया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र महिला, पुरुषों की सामाजिक सौहार्दता की एक ऐसी मिशाल है जिसे एक-दूसरे के नाम जोड़े बगैर उसका परिचय अधूरा से लगने लगता है । ऐसे विशाल हृदय का धनी यह क्षेत्र आज कुछ स्वार्थी तत्वों के कृत्यों द्वारा अपनी गरिमा, प्रतिष्ठा खोता जा रहा है । अनाश्रितों को आश्रय देने वाला यह क्षेत्र आज खुद अपने ही लोगों का आश्रय छीनकर जीवन जीने के सारे संसाधनों पर कब्जा कर रखा है । हताश, निराश, गरीब महिला, पुरुष पेट की रोटी के लिए दर-दर भटकने को मजबूर हैं । यहाँ के ग़रीब दो जून की रोटी के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं लेकिन पेट नहीं भर पाते। रोजगार के स्थायी अवसर न होने से मजदूर वर्ग गाँव, घर, जिले से लेकर प्रदेश तक से पलायन कर जाते हैं। जिन्हें आसपास काम मिलता भी है, उन्हें दाम मिले यह जरूरी नहीं है। मजदूरी पचाकर, मजदूरों को दुत्कार कर भगा देना अथवा उल्टे कर्ज़ लाद देना यहाँ के सबल समुदायों की खानदानी परम्परा है। ग़रीब तबका इन्हीं हालातों के बीच जीता, झटपटाता अथवा घर-गाँव छोड़कर बाहर भाग जाता है। सरकार की ओर से आजीविका के सुरक्षा के लिए जो प्रयास होते रहे वे भी सबल समुदायों के षड़यन्त्र के चलते दम तोड़ते रहे।

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा संचालित पैक्स कार्यक्रम में आजीविका की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए बुन्देलखण्ड के ५ जिलों के ७ ब्लाकों की ११३ ग्राम पंचायतों के २५७ गाँवों में ब्यापक रूप से जनपैरवी, पंचायत सशक्तिकरण, महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्नि तरह के प्रयास किये जा रहे हैं । महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत सामाजिक आर्थिक उन्नयन हेतु सभी विकासात्मक गतिविधियों की निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी तथा बेहतर आजीविका संवर्द्धन के संसाधनों तक पहुँच बनाने का उद्देश्य निर्धारित किया गया। इस उद्देश्य के तहत परिणामों की संभावना आंकी गयी कि स्वयं सहायता समूह सामाजिक, आर्थिक एवं आजीविका संबंधी निर्णय लेने में सक्षम होंगे। पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी तथा वे पंचायत निर्णय को प्रभावित करेंगी। ऐसे परिणामों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ जैसे स्वयं सहायता समूह निर्माण बैठकें, स्वयं सहायता समूह प्रबन्धन बैठकें, स्वयं सहायता समूहों के निर्माण हेतु स्वयं सेवकों का प्रशिक्षण, स्वयं सहायता समूह अनुश्रवण बैठकें, स्वयं सहायता समूह बैंक से जुड़ाव प्रशिक्षण, स्वयं सहायता समूह संघ निर्माण प्रशिक्षण, लघु उद्यम विकास प्रशिक्षण, पंचायत प्रतिनिधि प्रशिक्षण, शैक्षणिक भ्रमण, पंचायत समिति क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण आदि के आयोजन किये गये। विभिन्न गतिविधियों के परिणाम स्वरूप मार्च, २००६ के अन्त तक कुल ३१४ स्वयं सहायता समूहों का निर्माण किया गया जिसमें २८६ महिला स्वयं सहायता समूह, २ मिश्रित स्वयं सहायता समूह तथा २६ पुरुष स्वयं सहायता समूहों का निर्माण हुआ। समूहों की कुल बचत ११,१५,७८४ रुपये है। ४३० महिलाएं विभिन्न प्रकार के स्वरोजगारों से जुड़ीं। २२४ समूहों में आन्तरिक लेन-देन की प्रक्रिया चल रही है। ३४६७ सदस्य सीधे स्वयं सहायता समूहों से जुड़े हैं जिनमें ३२०३ महिलाएं हैं तथा २६४ पुरुष हैं। इसी तरह चिनगारी संगठनों की कुल संख्या १८७ है, जिनमें १६ पुरुषों के, ५ महिलाओं के तथा १६६ मिश्रित हैं। चिनगारी संगठनों में कुल ३१२४ सदस्य हैं जिनमें १६८७ पुरुष तथा १४३७ महिलाएं हैं। विभिन्न स्वरोजगार परक गतिविधियों के कारण महिलाओं की आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है। स्वयं छोटे-छोटे उद्यम प्रारम्भ करने से उनके आत्मबल में वृद्धि हुई है। आत्मनिर्भर हुईं हैं। शोषण उत्पीड़न में कमी आयी है। घर एवं समाज में सम्मान बढ़ा है। निर्णय प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाने लगी हैं। ग्राम पंचायत चुनाव में कार्यक्षेत्र की ११३ ग्राम पंचायतों में स्वयं सहायता समूहों एवं चिनगारी संगठन के सक्रिय हस्तक्षेप से ५१ प्रधान तथा ३६८ वार्ड मेम्बर चुनकर आयें हैं। इन पंचायतों में चुनकर आयीं महिलाएं ४७ प्रतिशत हैं। महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के कुछ केस अध्ययन यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

मीरा को मिला जीविका का सही आधार

नहरी ग्राम पंचायत के मजरा उदयीपुरवा की मीरा पत्नी राजकिशोर अति गरीब, आर्थिक तंगी की शिकार एक-एक रोटी के लिये परेशान थीं । मीरा की उम्र ३२ वर्ष है, उनकी शिक्षा ५वीं तक है । मीरा को जब मालूम हुआ कि **परागीलाल विद्याधाम समिति** नरैनी द्वारा समूह बनाने की बात चल रही है तो वह एक दिन समूह गठन की बैठक में आयीं । बैठक में चल रही बातों को बड़े ध्यान से सुनकर समूह से जुड़ने की अपनी इच्छा प्रकट की । परिवार की स्थिति को बताया कि हमारे परिवार में ससुर, पति और दो बच्चे हैं । परिवार की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है । वह बहुत सक्रिय महिला है । २०.६.०३ को आशा स्वयं सहायता समूह से जुड़कर समय से बैठकों में जाती, समूह की सभी सदस्याओं को बुलाकर लाती थीं । मीरा के घर की आर्थिक-सामाजिक स्थिति बहुत कमजोर थी । कुछ काम धन्धा न मिलने के कारण मीरा का समय व्यर्थ में जाता था । जब समूह की बैठकों में जाती थीं तो समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा किराना की दूकान रखने के लिये प्रोत्साहित किया गया । मीरा के पास पैसे नहीं थे । मीरा ने अपने समूह से २५००.०० रु० लेकर एक दूकान रखी। धीरे-धीरे दूकान चलने लगी । समूह की सभी सदस्यायें मीरा की दूकान से सामान लेती हैं । एक वर्ष के बाद आज मीरा की दूकान ७००० रु० की हो गयी है । उध ाार लिया पैसा वापस कर दिया है तथा घर का पूरा खर्च इसी दूकान की आमदनी से चलता है । दूकान में मीरा के समय का उपयोग होता है तथा अब मानसिक तनाव भी नहीं रहता । अपने पूरे घर का खर्च, बच्चों की पढाई-लिखाई, साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने लगी है, संस्था के प्रयासों से अब मीरा की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, घर-परिवार अच्छी प्रकार से दाल-रोटी खा रहा है । मीरा एक बहुत ही हिम्मती, मेहनती, जागरूक महिला है । आज मीरा अन्य महिलाओं के लिये उदाहरण बनी है ।

जनहितैषी कार्यों ने बनाया रश्मि को ग्राम प्रधान

रश्मि देवी ग्राम पंचायत पुंगरी की प्रधान बन गईं हैं । उत्साह तथा आत्मविश्वास से परिपूर्ण पंचायत में कुछ नया कर दिखाने की तम्मना लिये रश्मि घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर पंचायत की बागडोर पहली बार अपने हांथों में संभाला है । रश्मि ने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं प्रधान बनूगीं । लेकिन सामाजिक बुराइयों एवं गाँव के दर्द से हमेशा दुखी जरूर रहती थी । पंचायत चुनाव में अनुसूचित जाति महिला के लिए आरक्षित सीटों में से चुनाव लड़ने का अवसर रश्मि को मिला । उसने स्वयं ब्लाक जाकर पर्चा दाखिल किया और अपने प्रचार-प्रसार में लग गई । **परागीलाल विद्याधाम समिति नरैनी** द्वारा पंचायत मतदाता जागरूकता अभियान के तहत गाँव-गाँव मतदाताओं को जागरूक करने के लिए पम्पलेट्स, पोस्टर, चिपकाये गये । रश्मि देवी ने इन पोस्टरों के माध्यम से मतदाताओं को अपने पक्ष में करने में बड़ी सफलता प्राप्त की । रश्मि की ललक और समर्पण देख मतदाताओं ने भी ठान लिया कि इस बार की प्रधान तो रश्मि को ही बनाना है । यद्धपि गाँव में आठ महिलाएं और भी चुनाव लड़ रही थीं, आरक्षण होने से चुनाव लड़ना उनकी मजबूरी थी । वह चुनाव में थीं पर घर से बाहर नहीं निकल सकीं । चुनाव परिणाम में रश्मि अपनी जीत लेकर पंचायत में आयीं और जिस प्रकार से वोट माँगने घर-घर पहुँची थीं, उसी प्रकार बधाई देने भी घर-घर गई । गाँव वाले दलित महिला प्रधान का काम देखकर बहुत खुश नजर आ रहे हैं । उसने अपने गाँव की राशन सामग्री वितरण व्यवस्था ठीक कराई है । बैठकों में स्वयं आना-जाना प्रारम्भ कर दिया है । एक महिला का पंचायत में इस प्रकार से निकलकर आना महिला सशक्तिकरण का आदर्श उदाहरण है ।

जब श्रमदान ने असंभव को संभव कर दिखलाया

कार्य की सिद्धि संसाधनों से नहीं, बल्कि व्यक्ति की लगन, जिज्ञासा, एवं दृढ़ इच्छाशक्ति ही कार्य सिद्धि के सेतु बनते हैं । भवानी इसका जीता-जागता उदाहरण है। बाँदा जनपद के नरैनी ब्लाक में म०प्र० की सीमा से लगे महाराजपुर गाँव की भवानी देवी ने कभी विद्यालय का मुँह नही देखा। बाल-विवाह की परम्परा में माँ-बाप ने चौदह वर्ष की उम्र में शादी कर परिवार की जिम्मेंदारियों का बोझ उसके ऊपर लाद दिया । ग़रीबी के कारण पति हमेशा बाहर-बाहर कमाते रहे । जाति प्रथा की संकीर्णता, आपसी ईर्ष्या और द्वेष ने गाँव की एकता को नष्ट कर दिया था । इन परिस्थितियों में भवानी के मन में हमेशा परिवर्तन की बात गूंजती थी । पढ़ने और बढ़ने की ललक से हमेशा अच्छे लोगों को खोजती थी । इस क्षेत्र में काम कर रही स्वैच्छिक संस्था **परागीलाल विद्याधाम समिति, नरैनी** के कार्यकर्ता जब इस गाँव पहुँचे तो भवानी इन कार्यकर्त्ताओं से मिल गाँव की स्थिति-परिस्थिति का बयान कर गाँव को विकास की मुख्य धारा से जोड़कर एक सूत्र में पिरोने की इच्छा व्यक्त कर दी । कार्यकर्त्ताओं ने समस्याओं को कुरेदना शुरू किया तो सभी ने बताया इस गाँव की प्रमुख समस्या जल संकट है । जब पानी के विकल्पो पर चर्चा हुई तब भवानी के मुँह से अनायास निकल पड़ा कि हमारे गाँव में चौवन बीघे का तालाब है, जो अपना अस्तित्व खो चुका है । यदि इस तालाब की सफाई, गहराई का काम हो जाये तो केवल महाराजपुर ही नहीं बल्कि आस-पास के छः गाँवों को पानी मिल सकता है । तालाब की सफाई, गहराई के विकल्पों की बात हुई तो सभी ने निर्णय लिया कि सरकार के भरोसे कुछ होने वाला नही है। सब लोग श्रमदान करके इस तालाब की सफाई का काम कर सकते हैं । फिर क्या था । सभी ने मिलकर ग्यारह दिन के विराट श्रमदान महायज्ञ का आयोजन किया, जिसका नेतृत्व भवानी ने स्वयं संभाल लिया । दूसरे दिन गाँव के सभी नर-नारी, बच्चे मंगल कलश सजाकर गीत गाते, नारे बोलते हुए श्रमदान के लिए निकल पड़े । गाँव का उत्साह देख आस-पास के गाँव के लोग भी श्रमदान में जुड़ गये । ग्रामीणों का उत्साह देख प्रशासन के अधिकारी भी श्रमदान स्थल पर पहुँचने लगे, उत्साह-उत्साह में २५ बीघे तालाब का खरपतवार साफ कर दिया गया। जब वर्षा हुई तो तालाब पानी से लबालब भर गया । अब आस-पास के लोग उस तालाब को रोज़गार से देखने लगे। मछली पालन हेतु तहसील मुख्यालय में दौड़ लगाने लगे । जब इसकी जानकारी भवानी को मिली तो उसने समूह की सभी महिलाओं को इकट्ठा कर तालाब की नीलामी समूह के नाम करवाने का निर्णय ले लिया, इसके लिए ग्राम पंचायत की बैठक बुलाई । बैठक में भूमि प्रबन्ध समिति का प्रस्ताव बनवाया और स्वयं सहायता समूह की ओर से प्रार्थना पत्र उपजिलाधिकारी को दिया गया । उपजिलाधिकारी ने नीलामी अधिकारी तहसीलदार को नियुक्त किया । भवानी अपनी समूह की सभी महिलाओं को लेकर नीलामी हेतु तहसील मुख्यालय में आ गयी । उस दिन मछुवा समिति के लोग भी नीलामी में आये थे । सभी ने नीलामी बोली अन्त में स्वयं सहायता समूह के नाम पन्द्रह हज़ार रुपये में नीलामी ली गई । समूह की सभी महिलाओं ने मिलकर पैसा भी जमा कर दिया किन्तु ग़रीब महिलाओं का यह प्रयास दबंगों को अच्छा नहीं लगा और उपजिलाधिकारी को तीन हज़ार रुपये देकर नीलामी कम रुपये में बोले जाने की आपत्ती लगाकर नीलामी निरस्त करने की प्रार्थना की । इसी प्रार्थना पर दबंगों के प्रभाव से उपजिलाधिकारी नरैनी श्री कुन्जबिहारी अग्रवाल ने पूर्व में हुई नीलामी को निरस्त कर पुनः नीलामी कराये जाने के निर्देश दिये । आनन-फानन में तालाब की नीलामी दुबारा करायी गयी, जिसमे दबंगो के वर्चस्व के कारण ग़रीब महिलाओं की आवाज दब गयी और १५ हज़ार की नीलामी दबंगों ने ८० हज़ार में बोलकर अपने पक्ष में करवा लिया। भवानी अपनी सभी बहनों के साथ निराश मन घर लौट आयी पर भवानी के मन में बार-बार यह प्रश्न कौंधते हैं कि स्वयं का परिश्रम पंचायत का प्रस्ताव और लोगों की भावनाओं के बाद भी एस०डी०एम० ने इन सबको ताक में रखकर एक दबंग के प्रभाव से नीलामी दूसरे के नाम कर दिया। आखिर जनभावनाएँ व पंचायत बड़ी हैं या एस०डी०एम० का आदेश? इस प्रश्न का उत्तर भवानी को नहीं मिला आज तक ।

आत्मनिर्भरता की दिशा में एक कदम

सरकार की तमाम विकासात्मक योजनाओं की क्रियान्वयन की वास्तविक छवि देखने की मंशा हो तो करतल न्याय पंचायत की सबसे छोटी ग्राम पंचायत कनाय इसका उदाहरण सिद्ध होगी । यहाँ की बहुसंख्यक आबादी हरिजन है । यह पंचायत पिछले पंचवर्षीय समग्र विकास योजना की अवधारणा को लेकर शासन द्वारा अम्बेडकर ग्राम के रूप में चयनित की गई थी । यदि एक अपवाद मायावती जी के आगमन की तैयारियों पर हुये कार्यों को छोड़कर देखा जाए तो अम्बेडकर योजना यहाँ निर्मूल एवं मुँह चिढ़ाती नजर आती है । आज भी यहाँ के अधिकांश लोगों को रोटी-कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताएं उपलब्ध नहीं हैं । आज भी रोजगार और बेकारी, भुखमरी जैसी समस्याएं हर व्यक्ति के सामने मुँह बाये खड़ी है । आज भी यहाँ के लोगो को जी तोड़ मेहनत के बदले महिलाओं को २५ रु० व पुरुषों को ३५ रु० मजदूरी प्राप्त होती है । ''मरता क्या न करता'' कि दशा में लोग यहाँ सब सहने को मजबूर हैं । पैक्स परियोजना के तहत **परागीलाल विद्याधाम समिति** के कार्यकर्ताओं का जब इस गाँव में आना-जाना प्रारम्भ हुआ और गाँव की समस्याओं को देखा गया तो महिलाओं को स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए प्रेरित किया गया । कार्यकर्ताओं की प्रेरणा से श्रीमती राजकली पत्नी देवीदयाल समूह गठन की प्रक्रिया में बढ़चढ कर भागीदारी निभाई । गाँव के अन्य महिलाओं को भी समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित किया । राजकली की पहल से यहाँ की दलित बस्ती में दो महिला स्वयं सहायता समूहों का निर्माण किया गया । राजकली आकांक्षा स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं । वह नियमित बैठकों में भाग लेती हैं, समय से बचत राशि जमा करती हैं, वह साक्षर हैं, इनके पति मजदूरी करके परिवार का पालन पोषण करते हैं । राजकली ने समूह से १००० रु० का ऋण लेकर एक छोटी सी किराना की दूकान प्रारम्भ की । आज यह दूकान बढ़कर लगभग ८००० रु० की हो गयी है । समूह से लिया गया ऋण भी राजकली ने ब्याज सहित जमा कर दिया है । इसी दूकान से घर खर्च भी चल रहा है । प्रतिदिन ६०-७० रु० का शुद्ध लाभ हो जाता है । सीजन के अनुसार लाभ की मात्रा में वृद्धि एवं कमी होती रहती है । राजकली के पति भी दूकान के कार्य में सहयोग करने लगे हैं । इनके दो बच्चे हैं दोनो स्कूल जाते हैं । राजकली समूह से जुड़कर बहुत अधिक खुश है । वह और अधिक ऋण लेकर दूकान बढ़ाने की तमन्ना रखती है । राजकली की प्रेरणा से श्रीमती पिरनिया देवी ने भी समूह से ऋण लेकर भैंस पालन का कार्य प्रारम्भ किया है । आज राजकली का परिवार हंसी-खुशी अपना जीवन-यापन कर रहा है ।

आवश्यकता है अन्य महिलाओं में मंजू देवी जैसी लगन, जिज्ञासा एवं दृढ़ इच्छाशक्ति की

श्रीमती मंजू देवी ग्राम उदयीपुरवा (नहरी) के एक मध्यम वर्ग के परिवार से सम्बन्ध रखती हैं । यह साक्षर हैं, इनके पति का नाम श्री रंजीत है । **परागीलाल विद्याधाम समिति** के कार्यकर्ता जब महिला सशक्तिकरण प्रावधान के तहत उदयी पुरवा गये तो वहाँ श्रीमती मंजू देवी से मुलाकात हुई और उन्हें संस्था की कार्यप्रणाली, उद्देश्यों की जानकारी दी गयी जिसके परिणाम स्वरूप श्रीमती मंजू देवी के अथक प्रयास से आशा स्वयं सहायता समूह का निर्माण किया गया जो आज भी निरन्तरता पूर्वक अपनी मंजिल की ओर अग्रसर है । धीरे-धीरे समूह का पैसा बढ़ा और सारी महिलाओं को आन्तरिक लेन-देन के लिए प्रेरित किया गया । परिणाम स्वरूप अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए श्रीमती मंजू देवी ने आय वृद्धि को लेकर सिलाई करने के धन्धे को चुना और अपने निजी प्रयास से समूह की अन्य महिलाओं से सहयोग राशि लेकर एक सिलाई मशीन खरीदी है और सिलाई सीखने की दिशा में भगीरथ प्रयत्न जारी है । श्रीमती मंजू देवी का उत्साह देखते ही बनता है । यदि समिति कार्यकत्री निश्चित समयावधि में किसी कारणवश समूह में नहीं पहुँची तो दुलारे बालक की तरह रूठ जाती हैं और हाथ पकड़कर अन्दर ले जाती हैं और न आने की शिकायत करती हैं जिसे देखकर लगता है कि निश्चित ही मंजू देवी एक दिन आत्म निर्भरता का श्रेष्ठ उदाहरण बनेंगी और समूह के लिए नींव का पत्थर साबित होंगी । आज वह धीरे-धीरे सफलता की ओर कदम दर कदम बढ़ा रही हैं । महिलाओं के प्रयोग में आने वाले वस्त्रों में जैसे ब्लाउज, पेटीकोट समीज आदि का निर्माण कर लेती हैं, जिससे धीरे-धीरे आमदनी भी बढ़ी है और आय बढ़ने से परिवार और समूह में उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है । आवश्यकता है मंजू देवी जैसी इच्छा व जिज्ञासा पैदा करने की । यदि ऐसी लगन और जिज्ञासा समूह की प्रत्येक महिला में जागृत हो सकी तो समूह निश्चित रूप से आर्थिक दिशा में सफलता की ओर बढ़ सकेगा ।

अन्य महिलाओं की प्रेरणास्रोत बनी सरोज

ग्राम पंचायत पंचमपुर की आबादी लगभग २००० (दो हजार) है। यहाँ कई वर्गो के लोग रहते हैं, कुल आबादी का ८० प्रतिशत भाग पिछड़ा एवं निर्धन है । यहाँ के लोग मेहनत, मजदूरी करके परिवार का भरण-पोषण जैसे-तैसे करते हैं । सरकारी प्रयासों का कोई प्रतिबिम्ब भी इनके पास तक नहीं पहुँचा । **परागीलाल विद्याधाम समिति** के कार्यकर्ताओं का परिचय इस गाँव से पैक्स परियोजना कार्यक्रम के तहत हुआ । कार्यक्रम क्रियान्वयन की कड़ी में महिला सशक्तिकरण का आधार लेकर जब कार्यकर्ता पंचमपुर गाँव में समूह निर्माण के लिए गये तो यहाँ श्रीमती सरोज से परिचय हुआ । श्रीमती सरोज के पति का नाम श्री कालका प्रसाद है। सरोज की उम्र इस समय लगभग ४२ वर्ष है एवं वह आठवीं तक पढ़ी हैं । कार्यक्रम की जानकारी और उद्देश्यों से इन्हें परिचित कराया गया । पहली ही मुलाकात में श्रीमती सरोज का सहयोग एवं उत्साह देखने लायक था । ऐसा लगता था जैसे बहुत पुरानी पहचान हो । कहीं भी अविश्वास एवं दूरी का एहसास नहीं होता था । श्रीमती सरोज के प्रयास से मुहल्ले की सभी महिलाओं को बुलाया गया और उन्हें परियोजना के उद्देश्यों से परिचित कराया गया, जिसको महिलाओं ने सुना और आश्वासन दिया कि इस विषय पर हम परिवार वालों से पूंछ कर बतायेंगे । लेकिन इतना सुनते ही सरोज ने सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली । बढ़ चढ़कर समूह से होने वाले फायदे का बखान किया स्वयं बागडोर संभालते हुये तत्काल सबको आश्वस्त कर रजामन्द करते हुए आनन-फानन समूह निर्माण करवा दिया जो आज भी उदीयमान सूर्य की तरह निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है । समूह का नाम जय लक्ष्मी माता स्वयं सहायता समूह रखा गया । कुछ समय पश्चात समूह में जब धनराशि बढ़ी और समिति द्वारा आय वृद्धि के कार्यक्रमों की चर्चा आपसी लेनदेन को बढ़ावा दिये जाने हेतु प्रोत्साहित किया तो श्रीमती सरोज को ऐसा लगा जैसे बिन मांगे मुराद पूरी हो गयी और उन्होंने इसका अनुसरण करते हुए सभी बहनों के समक्ष अपना प्रस्ताव रखा कि यदि आप सबकी स्वीकृति हो तो मुझे कुछ धनराशि ऋण के रूप में दूकान बढ़ाने हेतु दे दिया जाये जिससे मेरी आर्थिक स्थिति को सम्बल मिल सकेगा । इस अकिचंन प्रयास में श्रीमती सरोज जी सफल हुईं और समयानुसार पैसा ब्याज सहित समूह को वापस किया और अपनी दूकान भी बढ़ायी । दूकान जो अन्दर थी वह बाहर आयी, सामान बढ़ाया और पुनः दूकान बढ़ाने हेतु प्रस्ताव बनाया है । प्रतिदिन दूकान से ५०-६० रुपये आय हो जाती है । श्रीमती सरोज अन्य महिलाओं के लिए भी एक उदाहरण साबित हुई हैं । अन्य महिलायें भी समूह से ऋण लेकर छोटे-मोटे उद्यम शुरू करने के लिए अग्रसर हुई हैं ।

रजनी देवी के आत्मविश्वास ने दिखाया जीवन जीने का मार्ग

ग्राम नहरी तहसील मुख्यालय से १८ किमी० दूर है । कहने को तो यह गाँव सड़क से जुड़ा हुआ है । लेकिन, यहाँ के लोगों की स्थिति-परिस्थिति को देखकर नहीं लगता है कि विकासशील देश के निवासी हैं । रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताएँ भी यहाँ के लोगों को प्राप्त नहीं हैं । आज भी गरीबी, लाचारी, विकलांगता, भयावह आपदायें इन लोगो को अपने जाल में पूरी तरह जकड़े हुए हैं । जब यहाँ जाकर देखा गया, सम्पर्क किया गया, तो यह तथ्य निकल कर सामने आये कि आज़ाद भारत में भी बहुत लोगों को रहने और खाने की दिक्कतों से किस तरह दो-चार होना पड़ रहा है । एक परिवार जिसकी सदस्य संख्या १५-१६ है, मात्र १० फुट के घर में जीवन-यापन कर रहा है । कल्पना कर सकते हैं कि उन्हें किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा । जन सम्पर्क के चलते इन समस्याओं से ग्राम प्रधान एवं प्रशासन को भी सूचित किया गया । इसी दौरान भुक्तभोगी श्रीमती रजनी देवी से मुलाकात हुई । रजनी देवी बारहवीं तक पढ़ी हुई हैं, उनके पति का नाम श्री भोला प्रसाद है । उन्होंने अपनी तंगी का हाल सुनाया जिस पर **परागीलाल विद्याधाम समिति** के कार्यकर्ताओं ने सलाह दी कि आप अपने मुहल्ले की ऐसी दस महिलाओं को इकट्ठा कर बैठक करवाइये जिसमें हम आपको एक योजना के बारे में बतायेंगे जिसके तहत आप सभी ग़रीब महिलायें थोड़ा-थोड़ करके बचत करेंगी और समूह के रूप में एक संगठन बनकर तैयार होगा, जिसके माध्यम से आप एक दूसरे की आर्थिक एवं सामाजिक मदद कर सकेंगी । इसी के तहत **उत्साह स्वयं सहायता समूह** का निर्माण हुआ जिसमें कुल सदस्य संख्या २० है । समूह की नियमित बैठकें एवं बचत राशि प्रतिमाह जमा होती है । रजनी देवी अन्य महिलाओं को बराबर प्रेरित करने का काम करती हैं । रजनी देवी के पति बाहर रहकर मेहनत मजदूरी का काम करते हैं । समूह में जब कुछ धनराशि इकट्ठी हो गयी तो आपसी लेनदेन की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई । श्रीमती रजनी देवी ने समूह के समक्ष अपना प्रस्ताव रखा कि यदि समूह उचित समझे तो उसे १००० रु० ऋण के रूप में दे देवे । वह इस धनराशि से विसातखाना की दूकान प्रारम्भ करना चाहती है । समूह ने रजनी देवी के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर उसे १००० रु० की धनराशि उपलब्ध कराई । रजनी देवी ने विसातखाना का सामान लाकर सर में टोकरी रखकर घर-घर सामान बेचना प्रारम्भ किया । रजनी देवी ने ब्याज सहित ऋण वापस कर दिया है । प्रतिदिन उन्हें ४०-५० रु० की आय हो जाती है । वह समूह से बड़ी राशि लेकर स्थाई विसातखाना की दूकान करना चाहती हैं । वह अपने पति को भी इस कार्य में लगाना चाहती हैं ताकि उनके पति को बाहर काम के लिए न जाना पड़े । अन्य महिलायें भी उनकी लगन एवं परिश्रम को देखकर लघु उद्यम के प्रति प्रेरित हो रही हैं । रजनी देवी इस कार्य में बहुत सकून महसूस करती है । वह संस्था के कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करती हैं जिनकी प्रेरणा से आज वह सकून भरी जिन्दगी जीने लगी हैं ।

गाढ़े समय में समूह के सहयोग से आर्थिक संकट से मुक्ति मिली

श्रीमती गीता पत्नी श्री कालीचरण कोल हरिजन समुदाय की महिला है । गीता की उम्र २५ वर्ष है । उसके दो पुत्र जिनकी उम्र क्रमशः २ वर्ष तथा ५ वर्ष है । परिवार में कुल ४ सदस्य हैं । गीता साक्षर है । गीता ग्राम पंचायत-ऊँचाडीह के मजरा-सेहकट की निवासिनी है । पैक्स परियोजना के तहत जब **पाठा कोल विकास समिति** ने सेहकट गाँव में महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया तो गीता समूह की सदस्य बनी । वह नियमित समूह में अपनी सहभागिता निभाती तथा बचत राशि जमा करती है। समूह का नाम कमल स्वयं सहायता समूह है । माह-मार्च, २००५ समूह की मासिक बैठक में गीता ने अपनी व्यक्तिगत परिस्थिति कहते हुए बताया कि उसका पति बीमार है, लगभग २५ रु० प्रतिदिन इलाज में खर्च हो रहे हैं, जिसके कारण वह लोग कोई काम (मजदूरी) आदि भी नहीं कर पाते, घर में आर्थिक संकट है, भरण-पोषण की समस्या है । गीता की बात को समूह की सभी सदस्यों ने गम्भीरता से समझा तथा गीता से उसकी इच्छा को जानने का प्रयास किया, जिस पर गीता ने कहा कि वह समूह से कर्ज लेकर अपने घर में छोटी सी किराना की दूकान करना चाहती है । गीता की बात को समूह ने स्वीकार किया तथा सामूहिक निर्णय के आधार पर गीता को रुपये १००० कर्ज स्वरूप देने तथा ३ रु० सैकड़ा की दर से ब्याज लगाने का निर्णय लिया गया । माह-अप्रैल, २००५ में गीता ने समूह से रु० १००० रु० प्राप्तकर अपने घर में एक दूकान रखी । धीरे-धीरे दूकान चलने लगी और गीता के परिवार का भरण-पोषण का संकट टल गया। गीता की दूकान में प्रतिदिन १५० से २०० रुपये तक की विक्री हो जाती है, जिससे प्रतिदिन उसे लगभग ४० से ५० रु० की आमदनी हो रही है । फसल आदि के सीजन में उसकी आमदनी और अधिक बढ़ जाती है । अप्रैल २००५ से लगातार गीता अपनी दूकान चला रही है । गीता का कहना है कि उसको अपने समूह से अत्यन्त कठिन समय पर जो सहारा मिला है, वह उसके लिए अति महत्वपूर्ण है। गीता ने ब्याज सहित ऋण किस्तों में अदा कर दिया है । वह प्रतिमास बचत राशि भी जमा करती है । वह अपनी दूकान को और ज्यादा पूँजी लगाकर बढ़ाना चाहती है । गीता का पति घर के कार्यों तथा दूकान के लिए बाजार से सामग्री लाने में सहयोग करता है । तबीयत ठीक रहने तथा खाली समय में मजदूरी करता है । गाँव के कुछ लोग दूकान से उधार सामग्री लेकर पलायन कर गये हैं, उसके बाद भी उसकी दूकान में आज लगभग ५००० हजार रुपये का सामान है।

अब हाथ नहीं फैलाते सूदखोरों के आगे

श्रीमती जावित्री पत्नी शेषमणी कुशवाहा पिछड़ा वर्ग समुदाय की २५ वर्षीया महिला है। जावित्री कक्षा ६वीं पास, पढ़ी-लिखी युवती है। अपने २ बच्चों सहित सास-ससुर के साथ रहती है। इनका संयुक्त परिवार है। जावित्री ग्राम पंचायत-सकरौंहा की निवासिनी है। जावित्री पैक्स परियोजना के अन्तर्गत गठित ज्योति समूह की सक्रिय सदस्य है। इस समूह में कुल १३ सदस्य हैं, प्रति सदस्य मासिक ३० रु० बचत किये जाते हैं । वर्तमान में समूह के पास ७२०० रु० की पूँजी है। समूह गठित हुए ढाई वर्ष हुए हैं । परियोजना के तहत महिलाओं का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया, तो उसमें जावित्री भी थी । जावित्री ने शैक्षणिक भ्रमण के दौरान मिली प्रेरणा से वापस लौटकर अपने समूह से १००० रु० का कर्ज़ लिया । कर्ज़ के पैसों से उसने घर में एक किराना की दूकान रखी । इस कार्य में उसके परिवार के अन्य लोगों ने भी सहयोग किया। धीरे-धीरे जावित्री की दूकान में १०० से १५० रुपये प्रतिदिन की बिक्री होने लगी, जिससे उसे प्रतिदिन २० रु० से ३० रु० तक आमदनी होती है। साथ ही वह अपने पारिवारिक कार्यों/दायित्वों को भी निभा रही है। उक्त पूँजी से सब्जी के मौसम में अपने घर के पास की लगभग २ बीघा ज़मीन पर जावित्री व उसके पति सब्जी की खेती करते हैं। सब्जी को वह अपनी दूकान एवं आस-पास के गाँवों की दूकानों पर बेंचकर भी आय कमाती हैं। इस कार्य में भी उन्हें प्रतिवर्ष लगभग ३००० से ५००० रु० की आमदनी होती है। जावित्री का कहना है कि समूह से जुड़ने, मीटिंग-बैठकों में भाग लेने व शैक्षणिक भ्रमण से उसकी समझ व आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। रोज़गार से जुड़ने के बाद उसका महत्व परिवार में बढ़ा है, उसके पास हमेशा कुछ न कुछ पैसे जमा रहते हैं, जिसे वह अपने परिवार की जरूरतों में खर्च करती है। जावित्री एवं उसके पति की भविष्य में गाँव में ही एक किराना की बड़ी दूकान खोलने की योजना है।

आज लक्ष्मी को मनिहारी का व्यवसाय रास आ रहा है

श्रीमती लक्ष्मी जिनकी उम्र लगभग ३५ वर्ष है कोरी परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। वह ग्राम-बुधौरा की रहने वाली हैं। मजदूरी कर अपना तथा अपने बच्चों का पेट पाला करती थीं। विगत २ वर्ष पहले **अरुणोदय संस्थान, महोबा** की पहल पर ग्राम-बुधौरा मे जय माँ काली स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया, जिसमे लक्ष्मी सदस्य के रूप में चुनकर सामने आयीं। संस्थान की ओर से अनेकों बैठको, प्रशिक्षणों के बाद इनमें धीरे-धीरे बदलाव आया। महिलाओं की स्थिति परिस्थित को देखकर साथ ही मजदूरी का अभाव इन्हें परदेश की ओर पलायन करने पर मजबूर करता रहा। इस प्रकार की विसंगतियों को ध्यान में रखते हुए अरुणोदय परिवार ने इन्हें स्वरोजगार की ओर मोड़ने का कार्य किया। लक्ष्मी ने मनिहारी व चूडी व्यवसाय को चुना जिसमें प्रारम्भ में लक्ष्मी ने ५०० रुपये लेकर रोजगार चालू किया और उस पैसे को निश्चित समय पर समूह को वापस किया। अपने इस व्यवसाय को बढ़ता देख इन्होंने अपने समूह से दुबारा १००० रुपये ऋण लिया और दूकान के सामान को बढाया और फेरी प्रारम्भ की। गांव-गांव फेरी करने पर महिलाओं ने अनेको प्रकार के उपयोग में आने वाली चीजों की माँग की। लक्ष्मी को आभास हुआ कि जब तक सारा सामान हमारे पास नही होगा हम इस व्यवसाय में पूरी तरह सफल नहीं होगें। तब लक्ष्मी ने अपने समूह से ५०० रुपये और ऋण व्याज पर लिया तथा दूकान की आवश्यकतानुसार कई चीजें खरीदीं। इस प्रकार लक्ष्मी ने समूह से कुल २००० रुपये मात्र लेकर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया। ब्याज सहित ऋण भी जमा कर दिया। आज लक्ष्मी की चूडी मनिहारी की दूकान में ५००० रुपये से भी अधिक का सामान उपलब्ध है। लक्ष्मी कहती हैं कि मेले, त्योहारों आदि में १०० से २०० रुपये तक की बचत होती है। आज इनकी दूकान में महिलाओं के उपयोग की प्रायः सभी सामग्री उपलब्ध है लक्ष्मी अपनी इस दूकान का सामान भी स्वयं ही खरीदती हैं। ये कभी कभी सामान खरीदने दिल्ली तक चली जाती हैं। परन्तु अधिकतर सामान मऊरानीपुर व नजदीक बेलाताल से ही खरीदती हैं। इन्होंने बताया की दुकान मे ज्यादा सामान की जरूरत शादी ब्याह के समय पड़ती है क्योंकि गाँव की महिलाएं जरूरत की सामग्री एक जगह पर लेना ज्यादा पसन्द करती हैं। लक्ष्मी अपनी दूकान की कमायी से २ बच्चों को पढा रही हैं, साथ ही पूरे घर का खर्च स्वयं वहन करती हैं। आज लक्ष्मी मजदूरी की अपेक्षा अपने इस व्यवसाय से प्रसन्न हैं।

आत्मविश्वास ने एक सफल व्यवसायी बनाया

श्रीमती रेखा पत्नी श्री सुखलाल, उम्र-३० वर्ष, जाति-कोरी (अनुरागी) ग्राम-जैतपुर मुहल्ला दरेरापुरा की मूल निवासी हैं। रेखा विगत ३ वर्ष पहले गाँधी आश्रम में कतायी का काम किया करती थीं जिसमें थोड़ी बहुत आमदनी हो जाती थी। इनके साथ इनके पति भी कपड़ा बुनने का काम किया करते थे। इसी से परिवार का पालन-पोषण होता था। परन्तु दबंगों के प्रभाव के चलते आश्रम की बागडोर ऐसे लोगों के हाथ लगी जिससे आश्रम पूरी तरह बन्द हो गया। क्षेत्र के सभी मजदूर बेरोजगार हो गये। लगातार संघर्ष के बाद पुनः गांधी आश्रम का कार्य शुरू कराया गया है। **अरूणोदय संस्थान, महोबा** के सहयोग से दिनाँक १६/६/०३ को गाँधी आश्रम स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया, जिसमें १५ सदस्य शामिल हुईं। संस्थान के साथियों के सहयोग से समूह मे बैठको का दौर प्रारम्भ हुआ। बचत के साथ- साथ महिलाओं को रोजगार की ओर मोड़ने का प्रयास जारी हुआ। समय-समय पर महिलाओं को लेकर रोजगारो का नजदीक से मूल्यांकन भी कराया गया। साथ-साथ कुशल प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण प्राप्त कर ग्रामीण महिलाओं को स्वयं पर निर्भर करने के प्रयास किये गये। रेखा जी पूरी तरह भूमिहीन हैं इनके पास रहने के लिए मात्र छोटा सा घर है। मजदूरी के अलावा जीविका कोई रास्ता नहीं था। इन्होने समूह से मात्र ५० रुपये, २ रुपये प्रति सैकड़ा मासिक ब्याज दर से ऋण लिया और सब्जी मण्डी जाकर प्रथम दिन में ही ५० रुपये की सब्जी खरीदी जिसमें ४ घण्टे में इन्होने २० रुपये का मुनाफा प्राप्त किया। अपने व्यवसाय का ब्यौरा देते हुए रेखा ने बताया कि सब्जी व्यवसाय का कोई स्थायी रेट नहीं होता, किसी दिन कम दाम में मिलती और बिकती है, किसी दिन ज्यादा। उन्होने बताया की हम आलू, बैगन, हरी मिर्च, हरी पत्ती मूली आदि सब्जियाँ खरीदते और बेचते हैं। कभी कभी अन्य सब्जी लेकर बेंचते है। रेखा जी उसी मण्डी में थोक रेट पर सब्जी खरीदती और बेंचती भी हैं। आज रेखा आत्मनिर्भर हैं। पूंछे जाने पर रेखा बताती है कि हम इससे पूरे घर का खर्च से चला रहे हैं और अन्य कोई व्यवसाय हमारे पास नहीं है। इनकी सोच में काफी परिवर्तन आया है और सब्जी की ही बड़ी दूकान करने का प्रयास जारी किये हुये हैं। आज रेखा कह रही हैं कि हम अभी २५ से ५० रुपये तक कमा लेते हैं परन्तु जल्द ही इस व्यवसाय को आगे बढ़ायेंगे।

स्वयं सहायता समूह के सहयोग से आर्थिक स्थिति में बदलाव के साथ-साथ पति की बुरी आदतों से भी निजात मिली

श्रीमती राजकुमारी पत्नी श्री नत्थू कोल हरिजन समुदाय की ३५ वर्षीया महिला है । राजकुमारी के परिवार में २ पुत्र, १ पुत्री व पति सहित कुल ५ सदस्य हैं । राजकुमारी ग्राम पंचायत-चुरेह केशरुवा के ग्राम-हाता की निवासिनी है । पैक्स परियोजना के तहत **पाठा कोल विकास समिति** द्वारा ग्राम-हाता में 'फूलमती' स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया, जिसमें राजकुमारी भी जुड़ी । लगभग ८-९ माह पूर्व राजकुमारी ने समूह से ५००० रु० लेकर गाँव में किराना की दूकान रखी तथा हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड की अपने ग्राम पंचायत की शक्ति डीलर बनी । राजकुमारी की दूकान धीरे-धीरे चलने लगी । अब उसके दूकान की प्रतिदिन विक्री १५० रु० से २०० रु० तक है । उसे ४० से ५० रु० प्रतिदिन की आमदनी हो जाती है । त्योहारों एवं शादी-विवाह के समय विक्री बढ़ती है साथ ही आमदनी भी अधिक होती है । राजकुमारी कहती है कि दूकान करने से पूर्व वह जंगल से लकड़ी लाकर बाजर में बेंचकर अपना परिवार पालती थी । उसके पति अक्सर ही ताश खेलते, नशा करते व उसके साथ झगड़ा किया करते थे, परन्तु अब स्थिति बदली है । दूकान में उसके पति सहयोग करते हैं । मैं अपने बच्चों की भी देख-रेख करती हूँ । पति के रवैये में उसके प्रति व्यवहार परिवर्तित हुआ है । राजकुमारी अपनी सोच व्यक्त करते हुए बताती है कि मैं किराना दूकान के साथ-साथ बकरी पालन करना चाहती हूँ । मैं दूकान का काम करुँगी तथा पति बकरी चराने व उनकी देखरेख करेंगे, ताकि पति को काम मिले, फुरसत न रहे जिससे वह पुनः बुरी आदतों के शिकार न हों । वह अपनी दूकान में बच्चों के कपड़े, चढ्ढी, बनियान व महिलाओं के श्रृंगार का सामान भी रखना चाहती है, जिससे उसकी पारिवारिक स्थिति और दृढ़ हो ।

स्वयं सहायता समूह ने रोज़गार के साथ-साथ आत्म सम्मान भी बढ़ाया

श्रीमती प्रेमा पत्नी श्री लल्लू हरिजन (रैदास) समुदाय की ४२ वर्षीया महिला है । प्रेमा के ३ पुत्र एवं ३ पुत्रियाँ हैं, जिनमें एक पुत्री विधवा है व एक पुत्र की शादी हो गयी है । पुत्रवधू भी घर में है । इस प्रकार घर में विधवा बेटी सहित ७ सदस्य हैं । घर की हालत/परिस्थिति जटिल है । प्रेमा ग्राम-चमरौड़ी डाड़ी, ग्राम पंचायत-चुरेह केशरुआ की निवासिनी है । प्रेमा अपने गाँव में **पाठा कोल विकास समिति** द्वारा गठित महेश्वरी स्वयं सहायता समूह की सदस्य है । अप्रैल २००५ में उसने अपने समूह से ५०० रु० ऋण लेकर विसातखाना (महिला श्रंगार) की दूकान व फेरी करना प्रारम्भ किया । धीरे-धीरे उसका सामान बिकने लगा तथा प्रेमा गाँव में घूम-घूमकर तथा अपने घर से सामान की विक्री करने लगी । प्रेमा को आमदनी भी ठीक-ठाक होने लगी । प्रेमा ने लगातार मेहनत की जिससे उसकी पूँजी ५०० रु० से बढ़कर आज लगभग ५००० रु० हो गयी है । प्रेमा की प्रतिदिन की विक्री १५० से ३०० रुपये तक है । उसकी प्रतिदिन की आय ५० से १०० रुपये तक है । त्योहारों तथा शादी-विवाह के सीजन में विक्री व मुनाफा अधिक होता है । प्रेमा हैण्डपम्प की मरम्मत का कार्य भी जानती है जिसको उसने अपने पति को सिखा दिया है । अब उसके पति हैण्डपम्प मैकेनिक का कार्य करते हैं । प्रेमा अपनी बहू को भी विसातखाना की दूकान व विक्री का कार्य सिखा रही है। प्रेमा के अनुसार अब उसको अपने विसातखाना दूकान के कार्य में किसी प्रकार की समस्या नहीं आती । वह कर्वी, डभौरा आदि स्थानों से सामान लाना तथा गाँव में विक्री करने आदि का कार्य स्वयं करती है । प्रेमा कहती है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़नें के बाद उसमें व उसके परिवार में परिवर्तन आया है । प्रेमा तथा उसके परिवार के सदस्यों में बचत भावना विकसित हुयी है । घर में उसको पूर्व की अपेक्षा अधिक सम्मान दिया जाता है । पारिवारिक कार्यों में उसकी सलाह को महत्व मिलता है । वह अपनी पूँजी लगातार बढ़ा रही है, ताकि भविष्य में अधिक से अधिक तरह के समान उसके पास विक्री हेतु रहें ।

अब रोटी के लाले नहीं पड़ते पार्वती के घर में

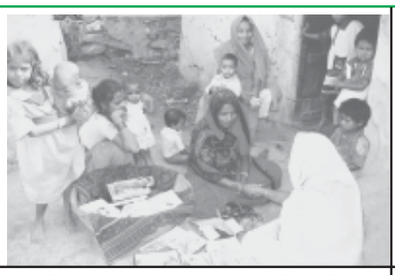

श्रीमती पार्वती पत्नी श्री विज्जो कोल, हरिजन समुदाय की ३२ वर्षीया महिला है। पार्वती के परिवार में ३ लड़की व २ लड़कों साहित ७ सदस्य हैं। पार्वती ग्राम-हर्दिहा ग्राम पंचायत कँदैला की निवासिनी है। पार्वती एक साक्षर महिला है। पार्वती का परिवार भूमिहीन है। आज से दो वर्ष पूर्व पार्वती जंगल से सिर पर लकड़ी का गट्ठा लाकर, बाज़ार में बेंचती थी एवं उसका पति विज्जों मेहनत, मज़दूरी से होने वाली आय से अपना व अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। परिवार में रोज़ी-रोटी का संकट हमेशा बना रहता था । पैक्स परियोजना के तहत हर्दिहा गाँव में महिलाओं के साथ स्वयं सहायता समूह गठन हेतु **जब पाठा कोल विकास समिति** द्वारा चर्चा की गयी, तो महिलाओं का समूह गठित हुआ, जिसमें पार्वती भी सदस्य बनी । सभी ने २०रु० प्रतिमाह की बचत करना चालू किया, जो निरन्तर ज़ारी है। १ वर्ष पूर्व पार्वती ने अपने समूह से ६०० रु० का ऋण लेकर महिलाओं के श्रृंगार (विसातख़ाना) की दूकान प्रारम्भ की। गाँव-गाँव में फेरी कर सामग्री बेचना चालू किया, उसका धन्धा चल गुजरा, उसे अपने कार्य में रुचि आने लगी । शुरू में चूड़ी, नाखूनी, बिंदी आदि ही वह बेंचती थी, परन्तु धीरे-धीरे उसने कई प्रकार के सम्बन्धित सामानों को लाना और बेंचना चालू किया। अब घर और आस-पास के गाँवों से महिलायें उसका सामान खरीदतीं हैं। पार्वती के अनुसार उसकी बिक्री प्रतिदिन १०० से ३०० रुपये प्रति दिन हो जाती है। त्योहारों व शादी-विवाह वाले समय में बिक्री ज़्यादा होती है। उसकी प्रतिदिन की आय २५ से १०० रु० तक हो जाती है, जिससे उसका परिवार ठीक से पल रहा है। रोज़ी-रोटी के लिए उसे अब ज़्यादा परेशानी नही होती । पार्वती के कार्य में उसके पति का सहयोग प्राप्त होता है। महुवा एवं तेंदूपत्ता के समय में दोनों इस कार्य से थोड़ी-बहुत आय करते हैं। पार्वती का मत है कि लकड़ी बेंचने से विसातख़ाना की फेरी लाख गुना अच्छी है। मैं अपने कार्य को करते हुए, अपने परिवार की देख-रेख कर लेती हूँ। धीरे-धीरे पूँजी बढ़ाकर हम पति-पत्नी अलग-अलग फेरी करेंगे, तो हमारी आमदनी बढ़ेगी। हमारी स्थिति अच्छी होगी। उसने बचत के पैसों से [illegible] खरीदी है ।

जब मनवसिया को मिला अधिकार

मानिकपुर ब्लाक मुख्यालय से 4 किमी0 दूर खिचरी गांव है । खिचरी ग्राम पंचायत में बेलहा, उमरी कालोनी, भैरम नगर, पिपरिहा टोला आदि गाँव आते हैं। यहाँ पर दो दर्जन से अधिक दलित आदिवासी विधवा महिलाएं है और एक दर्जन निराश्रित वृद्ध/वृद्धाएं है। **इनमें से कुछ गिनी-चुनी विधवाओं को ही पेंशन** मिल रही है। कालोनी गाँव की सुअना बेवा मूलचन्द्र, देवली बेवा मुन्ना व मनवसिया बेवा पुरी को ७५० रु०, ७५०रु० छमाही पेंशन मिलती थी, लेकिन सुअना एवं देवली की पेंशन बैंक में ही काट ली जाती थी। यह सिलसिला लगातार चल रहा था। तुलसी ग्रामीण बैंक के प्रबन्धक से **पाठा कोल विकास समिति** के कार्यकर्ताओं ने चर्चा की और उन्हें प्रेरित करने में सफल हुए । प्रबन्धक ने इन विधवाओं की पूरी पेंशन देने का आश्वासन दिया तथा आश्वासन के अनुसार पेंशन देने लगे । समिति के कार्यकर्ताओं ने इन महिलाओं को पेंशन के बारे में बताया कि बैंक में पेंशन आ गई है तो तीनो महिलाएं बैंक आयीं और पैसा निकालने के लिए विड्राल भरा तो मनवसिया का विड्राल वापस कर दिया गया और कहा गया कि तुम्हारा पैसा नहीं है तो वह सन्न रह गयी । सामाजिक कार्यकर्ताओं ने धैर्य बंधाया और अगले दिन समाज कल्याण अधिकारी चित्रकूट के यहाँ मनवसिया की पेंशन पता लगाई लेकिन पता नहीं चल सका । सरकारी कर्मचारी टाल मटोल करते रहे। अंत में जिला समाज कल्याण अधिकारी से स्वयं मनवसिया मिली । उन्होने बताया कि गाँव के किसी व्यक्ति द्वारा मनवसिया को मृतक बताया गया है । जबकि वह स्वयं जीवित है । मनवसिया निराश होकर घर बैठ गई । समूह की महिलाओं ने पुनः मनवसिया को धैर्य दिलाया और पुनः सचिव एवं प्रधान की आख्या लेकर मनवसिया जिला समाज कल्याण अधिकारी चित्रकूट के पास गयी लेकिन उनसे भेट नहीं हो सकी । वहाँ के कर्मचारियों ने मनवसिया को भगा दिया । कारण यह था की मनवसिया एक भी रुपया घूस देने को तैयार नही थी । देती भी कैसे जब उसके पास एक पाई भी नहीं थी । दिनांक 3.7.05 को पुनः मनवसिया एक सामाजिक कार्यकत्री को लेकर समाज कल्याण अधिकारी चित्रकूट के कार्यालय गयी। इस बार भी पूर्व की भांति यहाँ के कर्मचारियों ने झिड़क कर वापस लौटाना चाहा लेकिन तब तक मनवसिया अपना प्रार्थना पत्र लेकर अधिकारी के कमरे में प्रवेश कर 5 माह की पूरी दास्तान सुना डाली और प्रधान व सचिव की आख्या दिखाई । समाज कल्याण अधिकारी चित्रकूट उस विधवा की दुखभरी कहानी सुनकर द्रवित हुये और पेंशन भिजवाने हेतु स्वीकृति प्रदान की। इस प्रकार मनवसिया की सक्रिय प्रयास से पेंशन प्राप्त करने में सफलता मिली।

रानी देवी की सूज-बूझ ने परिवार को आर्थिक दासता से मुक्ति दिलायी

रानी देवी पत्नी श्री पन्ना लाल गुप्ता उम्र लगभ ३१ वर्ष ग्राम पंचायत स्योंढ़ा की निवासिनी है । इनका मायका जरर है । इनके चार पुत्रियाँ और एक पुत्र है । सभी बच्चें अभी नाबालिग हैं । रानी देवी साक्षर हैं । रानी देवी के पति मेहनत, मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करते थे । **कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा** के कार्यकर्ताओं का गाँव में पैक्स कार्यक्रम के तहत आना-जाना प्रारम्भ हुआ । रानी देवी ने भी संस्थान की बैठकों एवं प्रशिक्षण आदि में भाग लेना प्रारम्भ किया । कार्यकर्ताओं की सलाह पर गाँव में **जय मुक्ता स्वयं सहायता समूह** का गठन किया गया । रानी देवी ने भी समूह की सदस्यता ग्रहण की । रानी देवी समूह की बैठकों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं, समय से बचत राशि जमा करती हैं तथा समूह की अन्य महिलाओं को भी प्रेरित करने का काम करती हैं । एक दिन रानी देवी ने समूह की बैठक में प्रस्ताव रखा कि यदि समूह उसे ५०० रु० का ऋण दे देवे तो वह दूध खरीद कर खोवा बनाने का कार्य प्रारम्भ करना चाहती हैं, क्योंकि उसके पास घरेलू कार्यों के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं है । पति को भी बराबर मजदूरी नहीं मिलती । रानी देवी ने तीन किस्तों में पूरा पैसा वापस करने का वचन भी समूह को दिया । समूह ने रानीदेवी के प्रस्ताव को स्वीकार कर ५०० रु० का ऋण प्रदान किया । रानी देवी ने दूध खरीदकर लाने का कार्य अपने पति को सौंपा तथा खोया बनाने का कार्य स्वयं संभाला । खोया ले जाकर बांदा मण्डी में बेचने का कार्य उसके पति कर रहे हैं । रानी देवी ने तीन माह में पूरा ऋण ब्याज सहित चुका दिया । पुनः धन्धा बढ़ाने की दृष्टि से १००० रु० समूह से ऋण प्राप्त किया । पुनः ली गई ऋण राशि भी ब्याज सहित वापस कर चुकी हैं। रानी देवी बताती हैं कि उन्हें महीने में १५०० से २००० रु० तक की आमदनी हो जाती है । तीज, त्योहारों एवं शादी-विवाह के समय आमदनी में वृद्धि हो जाती है । रानी देवी के सभी बच्चे स्कूल जाते हैं । रानी देवी के पति अब किसी की मजदूरी हेतु नहीं जाते हैं । परिवार का भरण-पोषण ठीक प्रकार से हो रहा है । रानीदेवी संस्थान कार्यकर्ताओं एवं समूह के प्रति आभार व्यक्त करतीं हैं जिसके कारण आज वह हँसी-खुशी के साथ जीवन

एक बेसहारा को जीने का आधार मिला

सुखरनिया पत्नी स्व० दुर्जन ग्राम पतरहा की निवासिनी है । वह एक असहाय महिला है । उसके परिवार में सुखरनिया के अलावा चार लड़कियाँ हैं, जिनका विवाह हो चुका है । वह अपने ससुराल में रहती हैं । उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है । वह भूमिहीन है । अपने गुजर-बसर के लिए वह टोकरी में विसातखाना की दूकान रखकर पास के गाँव में बेंचने का काम करती थी, जिससे उसे प्रतिदिन १०-१५ रु० की आय हो जाती थी । गाँव में पैक्स कार्यक्रम के अन्तर्गत महिला सशक्तीकरण को ध्यान में रखकर **कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा** के कार्यकर्ताओं द्वारा गाँव में स्वयं सहायता समूह निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई । सुखरनिया को जब इसकी जानकारी मिली तो वह भी कार्यकर्ताओं से मिली और समूह में शामिल होने की इच्छा प्रकट की । कार्यकर्ताओं की पहल से गाँव में शारदा स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया । सुखरनिया को इस समूह का सदस्य बनाया गया । वह पहले अनपढ़ थी कार्यकर्ताओं ने उसे अब अपने हस्ताक्षर करना सिखा दिया है । एक दिन स्वयं सहायता समूह की बैठक में सुखरनिया ने प्रस्ताव रखा कि उसके पास पूंजी नहीं है कि वह और अधिक बिसातखाने का सामान लेकर बेंचे ताकि अधिक आय हो सके । यदि समूह उसे २०० रु० ऋण दे दे तो इससे सामग्री बढ़ा ले । समूह ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार किया एवं ८.११.०४ को उसे २०० रुपये ऋण स्वरूप प्रदान किये गये । सुखरनिया ने इन रुपयों से सामान बढ़ाया और बेचना प्रारम्भ किया तो उसे प्रतिदिन ३० से ३५ रुपये मिलने लगे । उसने उस ऋण को एक माह में चुकता कर दिया । पुनः ८.२.०५ को ५०० रुपये समूह से ऋण प्राप्त किया । अब और ज्यादा सामान रखकर गाँव-गाँव बेंचने लगी। उसे अब ५०-६० रुपये प्रति दिन के हिसाब से आय होने लगी है । सीजन के हिसाब से आय घटती-बढ़ती रहती है । बरसात में आय ३० से ३५ रुपये तक होती है । स्वयं सहायता समूह की पहल से विधवा पेंशन हेतु उसका प्रार्थना पत्र लिखा गया एवं फार्म भी भरा गया है, जिसको प्रधान से प्रमाणित करवाकर जिला समाज कल्याण अधिकारी के पास भेजा गया है । उसकी विधवा पेंशन स्वीकृति हो गई है । सुखरनिया का जीवन इस समय बड़े आराम के साथ व्यतीत हो रहा है । सुखरनिया समूह के प्रति कृतज्ञ है, जिसकी मदद से उसकी विधवा पेंशन मिलने लगी एवं जीविका का स्थायी आधार मिला ।

गीता देवी की लगन एवं मेहनत ने जीवन जीने की राह दिखाई

गीता देवी पत्नी अवधेश ग्रामसभा-बरईमानपुर, क्षेत्र-महुआ, जिला-बांदा की निवासिनी हैं । गीता देवी की उम्र लगभग ३५ वर्ष है तथा उसकी शैक्षिक योग्यता ५वीं है । गीता देवी का मायका बरईमानपुर है तथा उसी गाँव में उसकी ससुराल भी है । उसके ३ लड़के तथा ३ लड़कियाँ नाबालिग हैं । उसका परिवार गरीबी रेखा के

नीचे जीवन यापन करता है । स्वयं सहायता समूह निर्माण के पहले गीता व उसके पति मेहनत मजदूरी कर अपना जीवन यापन करते रहे । अप्रैल २००३ में **कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा द्वारा पैक्स परियोजना** के अन्तर्गत महिला सशक्तिकरण के तहत सामुदायिक कार्यकर्ता हेमा चौरसिया ने समूह बनाने हेतु गीता देवी से सम्पर्क किया। गीता देवी ने समूह का महत्व समझा तथा समूह से जुड़ने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा अन्य महिलाओं को भी उसने समूह से जोड़ने का प्रयास किया । उसके इस कार्य में उसके पति भी सहयोग करते रहे । गीता देवी ने १० महिलाओं को एकत्र कर **विन्ध्यवासिनी स्वयं सहायता समूह** का गठन दिनांक ३०.८.०३ को करवाया । गठन के बाद गीता देवी लगातार कार्यक्रमों एवं बैठकों में सहभागिता करती रही, साथ ही समूह से जुड़ी महिलाओं को बैठकों में लाती रही । समूह को आगे बढ़ाने हेतु बैठक की कार्यवाही, हिसाब-किताब समूह के सदस्यों द्वारा करने की प्रेरणा देती रही । पैसा जमा करना ही नहीं बल्कि स्वरोजगार का भी महत्व संस्था के कार्यकर्ताओं द्वारा पाकर उन्होंने प्रथम आन्तरिक लेन-देन के तहत २००० रुपये का ऋण नारियल, प्रसाद की दूकान रखने हेतु लिया तथा उसने नवरात्रि मेले में कुछ धन घर से लगाया मेले में उसने बड़ी मेहनत से रोजगार को चलाकर तीन हजार रुपये का लाभ प्राप्त किया । इसके बाद उसने समूह के ऋण को ब्याज सहित वापस किया तथा प्राप्त लाभ से गीता देवी लगातार रोजगार बढ़ाने का कार्य करती रहीं । उसे इस व्यवसाय से बराबर लाभ हो रहा है और वह अपने परिवार का भरण-पोषण ठीक प्रकार से कर रही है । इस रोजगार में उसके पति का भी भरपूर सहयोग मिल रहा है । अब गीता देवी के जीवन स्तर में काफी बदलाव आया है । घर पर भी उसके निर्णयों को मान्यता प्राप्त होती है । अन्य महिलाओं के लिए भी वह एक प्रेरणा की केन्द्र है ।

समूह की पहल से समय के सदुपयोग का मार्ग मिला

लक्ष्मी देवी पत्नी श्री गिरवर उम्र लगभग ३० वर्ष, जाति गुप्ता ग्राम पंचायत स्योढ़ा की निवासिनी है । लक्ष्मी देवी का मायका बाँदा है । लक्ष्मी देवी के दो पुत्र व दो पुत्रियाँ हैं जो अभी नाबालिग हैं । वह कक्षा ८ उत्तीर्ण है । समूह निर्माण से पहले लक्ष्मी देवी घर के कामकाज में समय व्यतीत करती थी तथा पति मेहनत मजदूरी का काम करते थे । अप्रैल २००३ में **कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा** द्वारा संचालित पैक्स परियोजना के अन्तर्गत कार्यकर्ताओं का गाँव में आना-जाना प्रारम्भ हुआ । समूह बनाने की प्रक्रिया के तहत महिला कार्यकर्ता हेमा चौरसिया ने समूह बनाने हेतु लक्ष्मी देवी से सम्पर्क किया । लक्ष्मी देवी ने समूह का महत्व समझा तथा अन्य महिलाओं से उसने समूह के विषय में बातचीत की । उसके इस कार्य में पति का भरपूर सहयोग मिला रहा । लक्ष्मी देवी ने अपने प्रयास से १० महिलाओं को एकत्र कर **जय मुक्ता स्वयं सहायता समूह** का गठन दिनांक २३.४.०५ को करवाया। उसके इस प्रयास से पड़ोस के कुछ लोग खुश नहीं थे, परन्तु वह किसी की भी बातों पर ध्यान नहीं देती रही और समूह संचालन में अपनी क्षमता बढ़ाती रही । समूह के विषय में अधिक से अधिक जानकारी लेने वह हमेशा उत्सुक रहती हैं तथा संस्था के विभिन्न प्रशिक्षणों में भाग लेती है । लक्ष्मी देवी को समूह की महिलाओं ने अध्यक्ष का पद सौंपा जिसे वह ठीक तरह से निवर्हन करती हैं। नियमित बैठक करवाना, सभी सदस्यों को सूचना देना, समय से बैठक में आने के लिए प्रेरित करना तथा मासिक बचत जमा करना। परियोजना कार्यकर्ता समूह की बैठकों में न भी आएं तो भी मासिक बैठक करवाना । लक्ष्मी देवी जिम्मेदारी से समूह संचालन कर रही हैं । लक्ष्मी देवी ने समूह से ऋण लेकर एक छोटी सी परचून की दूकान रखी। ऋण की अदायगी ब्याज सहित किस्तो में कर दी है। उन्हें इस दूकान से ४०-५० रु० तक की आमदनी हो जाती है । वह बराबर रोजगार को बढ़ाने की दिशा में सोचती रहती है । वह बैंक से सी०सी०एल करवा कर ऋण प्राप्त कर रोजगार को बढ़ाना चाहती है । धीरे-धीरे वह पति को भी इसी रोजगार में लाना चाहती है ।

राजकुमारी आत्मनिर्भरता का उदाहरण बनी

राजकुमारी पत्नी स्व० सुखदेव उम्र ४० वर्ष ग्राम पंचायत जरर के मजरा जंजीराबाद की निवासिनी है । उसके दो लड़के, चार लड़कियां हैं, जो शादीशुदा हैं । राजकुमारी निरक्षर थी । पैक्स परियोजना के तहत **कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा** के कार्यकर्ताओं ने गाँव में समूह बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ की तथा इसी सन्दर्भ में राजकुमारी से भी सम्पर्क किया । राजकुमारी ने समूह का महत्व समझा और सहर्ष समूह से जुड़ने हेतु तैयार हुई तथा अन्य महिलाओं को भी उसने समूह से जोड़ने का प्रयास किया । उसके इस कार्य में बेटे का सहयोग मिलता रहा । राजकुमारी ने १० महिलाओं को अपने प्रयास से एकत्र कर **गंगा स्वयं सहायता समूह का गठन करवाया** । उसके इस प्रयास को देखकर गाँव के कुछ लोग उसकी हंसी करते थे, परन्तु वह किसी की बातों पर कोई ध्यान नहीं देती थी । समूह के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी लेने के लिये वह हमेशा उत्सुक रहती है तथा संस्था के प्रशिक्षणों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है । इसी बीच वह अपने हस्ताक्षर बनाने हेतु सामुदायिक कार्यकत्री से बराबर सीखती रही । कुछ दिनों के प्रयास से ही वह अपने हस्ताक्षर बनाने लगी तथा अन्य सदस्यों को भी हस्ताक्षर बनाने के लिये प्रेरित किया जिसमें ८ सदस्य अपने हस्ताक्षर करने लगीं । इस प्रकार उसने समूह संचालन हेतु अपनी क्षमता बढ़ाई । समूह की नियमित बैठके, माह की बचत धनराशि, स्वयं बैठक करवाना तथा कार्यवाही स्वयं लिखना तथा सभी महिलाओं को प्रेरित करती है तथा स्वयं पैसा इकट्ठा कर बैंक में जमा करवाने जाती है । रोजगार के कार्यक्रमों से आय बढ़ाने की जिज्ञासा उसके मन में बनी रहती है । समूह से ऋण लेकर राजकुमारी ने भैंस खरीदा है एवं दूध बेचने का कार्य कर रही हैं । समूह से लिये गये ऋण एवं ब्याज की वापसी किस्तों में समय से कर रही हैं तथा अन्य सदस्यों को स्वरोजगार से जुड़ने हेतु प्रेरित कर रही हैं । समूह की बैठकों की कार्यवाही कुछ माह पहले तक संस्था की महिला कार्यकर्ता द्वारा लिखी जाती थी । राजकुमारी ने धीरे-धीरे कार्यवाही लिखना सीखा एवं वर्तमान में समूह की मासिक बैठकों की कार्यवाही स्वयं लिख रही हैं । संस्था की ओर से समूहों की महिला सदस्यों का शैक्षणिक भ्रमण ताराग्राम, ओरछा का कराया गया था जिसमें राजकुमारी जी ने भी सहभागिता की थी । वहाँ से स्वरोजगार के सन्दर्भ में उन्हें जो प्रेरणा मिली थी उसको अपने समूह में उतारने का पूरा प्रयास किया है ।

समूह के सहयोग से संभल गई गुदरी की दूकान

गुदरी देवी पत्नी श्री मूलचन्द्र जाति चौरसिया, ग्राम बरईमानपुर, ब्लाक महुआ, जिला-बांदा की निवासिनी है । गुदरी देवी की उम्र लगभग ३४ वर्ष है । गुदरी देवी का मायका बरईमानपुर है तथा वह उसी गाँव में ब्याही है। उसके १ पुत्र व तीन पुत्रियाँ हैं । गुदरी देवी एवं उनके पति स्वयं सहायता समूह निर्माण से पहले मजदूरी कर अपना जीवन यापन करते थे । पैक्स परियोजना के तहत अप्रैल २००३ से **कृष्णार्पित सेवाश्रम, अतर्रा** द्वारा गाँव की समस्याओं के निदान हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में स्वयं सहायता समूहों का निर्माण प्रारम्भ हुआ इसी कड़ी में कार्यकर्ताओं ने स्वयं सहायता से जुड़ने हेतु गुदरी देवी को प्रेरित किया । वह समूह से जुड़ने के लिए तैयार हो गई । अन्य महिलाओं को भी समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित किया । इस प्रकार १५ महिलाओं ने मिलकर माँ सन्तोषी स्वयं सहायता समूह का गठन दिनाँक १८.१.२००४ को करवाया । गुदरी देवी समूह की बैठकों में नियमित भाग लेती है तथा समय सें बचत धनराशि जमा करती हैं । गुदरी देवी ने अपने पुत्र को एक छोटी सी चाय-पान की दूकान करवाई। दूकान को बढ़ाने हेतु उसने दिनाँक ३०.६.२००५ को २००० रु० समूह से ऋण प्राप्त किया, कुछ धन अपने पास से मिलाकर चाय, समोसा, एवं मिठाई की दूकान उसने नवरात्रि मेलें में लगाई। पति-पत्नी व पुत्र ने मिलकर मेहनत की । गुदरी देवी ने जो मूलधन लगाया था उसे निकाल कर ३८०० रु० की आमदनी हुई । गुदरी देवी ने दिनाँक ३०.१०.०५ को ब्याज सहित पूरा रुपया समूह को वापस कर दिया । अब वह बराबर दूकान चला रही हैं । गुदरी देवी का परिवार इस दूकान के बल पर हंसी-खुशी के साथ जीवन यापन करने लगा है । गुदरी देवी की जिज्ञासा है कि समूह का सी०सी०एल० हो जाये तो वह समूह से और अधिक ऋण लेकर दूकान को बढायेगी ताकि उसकी आर्थिक स्थिति और सुदृढ़ हो सके ।

आज मुन्नी देवी रोजी-रोटी के लिये किसी की दया पर निर्भर नहीं है

मुन्नी देवी पत्नी बरातीलाल उम्र ४२ वर्ष ग्राम सभा बरईमानपुर की निवासिनी हैं । मुन्नीदेवी का मायका बरईमानपुर है और वह ग्राम पंचायत बरईमानपुर में ही व्याही है । उनके छः लड़कियाँ एवं ३ लडके हैं, जिसमें तीन लड़कियों की शादी हो गयी है । ३ लड़किया एवं ३ लड़के नाबालिग हैं । मुन्नी देवी का परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करता है । स्वयं सहायता समूह निर्माण से पहले मुन्नीदेवी मेहनत-मजदूरी का काम करके किसी न किसी तरह से अपने परिवार का पालन-पोषण करती थीं । अप्रैल, २००३ में **कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा** द्वारा पैक्स परियोजना के अन्तर्गत महिला सशक्तीकरण के तहत समूह बनाने का कार्य प्रारम्भ किया गया । समूह बनाने की प्रक्रिया में मुन्नी देवी से भी सम्पर्क किया गया । मुन्नी देवी ने समूह का महत्व समझा और समूह से जुड़ने हेतु अपनी सहमति प्रदान की । अन्य महिलाओं को भी समूह से जोड़ने में उनका सहयोग प्राप्त हुआ । उनके इस कार्य में पति का भी सहयोग रहा । मुन्नीदेवी ने १५ महिलाओं को एकत्र कर **माँ सन्तोषी स्वयं सहायता समूह** का गठन दिनांक १८.१.०४ को करवाया । गठन के बाद गांव के अन्य लोग मुन्नीदेवी की हंसी उड़ाते रहे, परन्तु ग्रामीण परिवेश से हटकर सामाजिक कार्य में निरन्तर प्रयास करती रही । अन्य लोगों की बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया । धीरे-धीरे मुन्नीदेवी ने समूह के माध्यम से अपना एवं समूह की महिलाओं का जीवन स्तर सुधारा । मुन्नीदेवी ने समूह से १००० रु० का ऋण लेकर नवरात्रि मेंले में नारियल, प्रसाद की दूकान की । इस रोजगार से उसे ६ दिन में कुल ३००० रु० का लाभ प्राप्त हुआ । समय से ऋण ब्याज सहित वापस किया । शेष लाभ के ६ ान से मुन्नीदेवी लगातार नारियल, प्रसाद की दूकान कर रही है, जिससे दिन-प्रतिदिन रोजगार बढ़ता गया । पुनः नवरात्रि मेले में रोजगार को अधिक बढ़ाने के लिए उसने समूह से ३००० रु० का ऋण प्राप्त किया । नवरात्रि मेले में बढचढ़ कर कार्य किया जिससे उसमें मुन्नीदेवी को ५००० रु० लाभ प्राप्त हुआ । इस प्रकार कार्य करने पर मुन्नीदेवी की आर्थिक स्थित में सुधार हुआ तथा जो गाँव के लोग उसकी हंसी उड़ाते थे, वही लोग मुन्नीदेवी की प्रसंशा करते नहीं थकते । मुन्नीदेवी अपने अलावा समूह की अन्य महिलाओं को भी इसी प्रकार के रोजगार करने हेतु प्रेरित करती हैं ताकि महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके । संस्था के इस प्रयास से मुन्नीदेवी के जीवन में सुधार हुआ तथा सम्पूर्ण परिवार स्वरोजगार से जुड़ गया । अब मुन्नीदेवी को किसी के सामने रोजी-रोटी के लिये हांथ नहीं फैलाने पड़ते । वह अपने रोजगार से अपने परिवार का भरण-पोषण ठीक प्रकार से कर रही हैं ।

समूह के सहयोग से गिट्टी तोड़ने से मुक्ति मिली

शिवदेवी पत्नी हरीराम ग्राम-पतरहा की निवासिनी है । वह पाल परिवार से सम्बन्धित है । उसके एक लड़की है । वह तथा उसके पति भरण-पोषण के लिये गिट्टी तोड़ने का काम करते थे । पैक्स परियोजना के तहत **कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा** के कार्यकर्ताओं का जब गाँव में आना-जाना प्रारम्भ हुआ तो शिवदेवी भी कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में आयी । कार्यकर्ताओं ने उसे समूह के महत्व को समझाया तथा समूह से जुड़ने की सलाह दी । उसने इस सम्बन्ध में अपने पति से बात-चीत की तथा दूसरे दिन समूह निर्माण हेतु बुलाई गई बैठक में भाग लिया । वह स्वयं समूह से जुड़ी तथा अन्य महिलाओं को समूह से जुड़ने हेतु प्रेरित किया । वह **शारदा स्वयं सहायता समूह** की सक्रिय सदस्य है । पहले वह भी अनपढ़ थी समूह से जुड़ने के बाद उसने अपना नाम लिखना सीख लिया है । एक दिन उसने समूह के समक्ष प्रस्ताव रखा कि मैं एक परचून की दूकान रखना चाहती हूँ अगस समूह की सहमति हो तो दूकान हेतु मुझे ५०० रुपये ऋण प्रदान किया जाए । समूह ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर ५०० रु० ऋण स्वरूप प्रदान किये। शिवदेवी ने उन पैसों से किराना का सामान मंगवाकर दूकान रखा । धीरे-धीरे उसकी दूकान चलने लगी, उसे प्रतिदिन दूकान से ४०-५० रु० तक का लाभ होने लगा । उसने दो किश्तों में ब्याज सहित ऋण वापस कर दिया । पहली किश्त ४.१.२००५ को तथा दूसरी किस्त ६.२.२००५ को जमा किया है । इसके बाद दुबारा ५०० रु० का ऋण प्राप्त किया तथा इस ऋण को भी १६.७.२००५ को ब्याज सहित वापस कर दिया । इस छोटी सी दूकान से अपने परिवार का पालन-पोषण ठीक प्रकार से कर रही है । अब वह गिट्टी तोड़ने नहीं जाती है । वह दूकान को और अधिक ऋण लेकर बढ़ाना चाहती है । वह धीरे-धीरे अपने पति को भी इसी कार्य में लगाना चाहती है, ताकि पति को भी इधर-उधर काम करने के लिए न जाना पड़े

आर्थिक दिशा की ओर एक-एक पग बढ़ाती सखिया देवी

सखिया देवी पत्नी बेटू जाति केवट ग्राम-काजीपुर के मजरा क्योटरा ब्लाक महुआ, जिला-बांदा की स्थायी निवासिनी है । सखिया देवी की उम्र लगभग २५ वर्ष है । सखिया देवी का मायका मबई ग्राम (म०प्र०) है । इनकी शादी के लगभग ३० वर्ष हो गये है । इनकी शादी बहुत कम उम्र में गाँव की जातिप्रथा के अनुसार हो गयी थी । शादी के ५ साल बाद ससुराल आईं । घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । पति मेहनत मजदूरी का काम करते थे । शादी के कुछ वर्ष बाद इन्हें भी जीविका चलाने हेतु मजदूरी करना पड़ा एवं लकड़ी-कण्डा बेंचकर घर खर्च चलाना पड़ा । इन्होने दो बार प्रधानी का चुनाव भी लड़ा । काफी वोट भी प्राप्त हुए किन्तु चुनाव जीतने में सफल नहीं हुई । इनका परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है । **कृष्णार्पित सेवाश्रम, अतर्रा** द्वारा इस गाँव में पैक्स परियोजना के तहत समूह गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई । दिनाँक २७.६.२००४ को इस मजरे में **रंजीत बाबा स्वयं सहायता समूह** का विधिवत गठन किया गया । इस समूह में १२ महिलाओं ने समूह संचालन की जिम्मेदारी संभाली, जिसमें सखिया देवी भी जुड़ी हैं । समूह की महिलाओं ने इनकी समझदारी को देखते हुए इनको समूह की कोषाध्यक्ष चुना । सखिया देवी ने समूह के संचालन में अपनी अच्छी जिम्मेदारी निभाई । ये महिला अनपढ़ रहते हुए भी समूह का सारा हिसाब-किताब बहुत अच्छे ढंग से करती है । स्वयं सहायता समूह की कार्यवाही अपने लड़के से लिखवाकर सभी महिलाओं को सुनाने का प्रयास भी किया । इस तरह समूह में इन्होंने मेहनत के साथ कार्य किया । यह समूह २० रु० प्रति महिला प्रति माह बचत करता है । इन्होंने अपने समूह की बैठक प्रत्येक माह की ३ तारीख को निश्चित किया है जो आज भी लागू है । समूह की सहमति से इन्होने ५०० रुपये ऋण लेकर परचून की दूकान प्रारम्भ की । यह पैसा ब्याज सहित इन्होने दो माह में वापस कर दिया । धीरे-धीरे जो आमदनी होती गई उससे दूकान बढ़ाने का कार्य किया । आज लगभग दूकान में ४००० रु० का सामान है । इनके पति मजदूरी आदि के माध्यम से जो आय सृजित करते हैं, उससे घर का खर्च चलता है तथा दूकान की आमदनी से अभी दूकान बढ़ाने का कार्य कर रही हैं । अन्य महिलाओं को भी स्वरोजगार से जुड़ने हेतु प्रेरित कर रही हैं । समूह के नाम सी०सी०एल० बनवाकर सामूहिक रूप से अनाज खरीदने का भी व्यवसाय करना चाहती हैं । संस्था का भी बराबर सहयोग प्राप्त हो रहा है । समूह अपने उद्देश्य में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करेगा ।

सामूहिक पहल ने जीवन जीने का मार्ग दिखाया

रेनू देवी, सावित्री, गिरिजा एवं तिजिया जाति - कोरी, ग्राम-रागौल, जिला-बांदा की स्थायी निवासिनी हैं । चारों महिलाओं में मात्र रेनू देवी की शैक्षिक योग्यता ८वीं है तथा अन्य तीनों सदस्य निरक्षर थीं । गरीब परिवार में रहकर अपने परिवार का पालन-पोषण करती रहीं । कृषि एवं मजदूरी के कार्य के अलावा उन्हें किसी भी प्रकार की जानकारी नहीं रहती थी । गरीब महिलाएं घर के अन्दर रहकर घरेलू कार्य एवं कृषि मजदूरी का कार्य ही जानती थी । घूंघट, पर्दा प्रथा, सामाजिक कुरीतियों जैसी बीमारी में हमेशा ये महिलाये लिप्त रहती थीं ।

कृष्णार्पित सेवाश्रम अतर्रा द्वारा संचालित पैक्स परियोजना के अन्तर्गत गाँव का सर्वेक्षण किया गया । सर्वे कर हरजिन बस्ती में एक बैठक सम्पन्न की गई एवं विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर चर्चा की गई । दिनाँक २२ दिसम्बर, ०५ को संस्था द्वारा जनसुनवाई कार्यक्रम में अन्य क्षेत्र के समूहों ने जिलाधिकारी महोदय के समक्ष अपनी समस्याओं को उजागर किया । इस प्रक्रिया को देखकर गांव की चारो महिलाएं तथा साथ में अन्य ६ महिलाओं को जोड़कर समूह बनाने हेतु संकल्प लिया गया । संस्थान की महिला कार्यकर्ता के प्रयास से दिनाँक २७.२.२००४ को **महेश्वरी स्वयं सहायता समूह** का गठन किया गया । इसके पहले ब्राम्हण परिवार की महिलाओं ने समूह में जुड़ने का प्रयास किया जबकि परियोजना के उद्देश्य के अनुसार गरीब समुदाय को जागरूक एवं सशक्त करना है । इस जानकारी के तहत गाँव की १४ महिलाएं हरिजन एवं पिछड़े वर्ग की जुड़कर समूह का निर्माण किया । ६ माह बाद उन्होंने समूह से आन्तरिक लेन-देन की प्रक्रिया प्रारम्भ की । सदस्यों से पैसा लेना, बैंक में जमा करना एवं निकालने का कार्य महिलाएं स्वयं करती थी । इधर सावित्री, गिरिजा एवं तिजिया ने अगूँठा लगाने के वजाय अपने हस्ताक्षर करना सीख लिया है । बैंक में बार-बार आना-जाना, घर से बाहर निकलने की आदत पड़ी । पर्दा प्रथा से भी छुटकारा प्राप्त हुआ । सामाजिक बुराइयों में न फंसकर आपसी मतभेदों को दूर करने में सफल रहीं हैं । धीरे-धीरे समूह को आगे बढ़ाती गई तथा बार-बार समूह से लेन-देन की प्रक्रिया से समझ भी विकसित हुई । समूह में पैसा जमा करना ही पर्याप्त नहीं है, हमें आर्थिक जीवन में सुधार भी करना है। इस उद्देश्य को लेकर समस्त महिलाओं ने कठिया गेहूँ का दलिया बनाने हेतु संकल्प लिया । माह मई में समूह से १००० रु० का ऋण लेकर एक कुन्तल गेहूँ खरीदकर सभी महिलाओं ने मिलकर दलिया तैयार किया तथा उसकी विक्री कर ३५० रु० का शुद्ध लाभ प्राप्त किया । इसके बाद उस लाभ तथा मूलधन को मिलाकर २ कुन्तल गेहूँ खरीदा गया तथा पुनः दलिया निर्माण कर बेंचा गया, जिससे उन्हें ७०० रु० का लाभ प्राप्त हुआ । सभी सदस्यों में मिलकर काम करने में कठिनाई दिखाई पड़ी इसके आधार पर अन्य महिलाओं को स्वतन्त्र रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया । इस समय उपरोक्त चार महिलाएं मिलकर इस रोजगार को चला रही हैं । इन महिलाओं ने मजदूरी करने के बजाय दलिया बनाने के कार्य को बेहतर समझा है । इस व्यवसाय को धीरे-धीरे बड़े पैमाने पर करना चाहती हैं ।

मजदूरी से अपना छोटा-मोटा व्यवसाय भला

गिरजा देवी पत्नी भगवानदास जाति-गड़रिया ग्राम-रागौल, क्षेत्र-महुआ, जिला-बांदा की स्थायी निवासिनी हैं । गिरजा देवी की उम्र लगभग ३० वर्ष है । शैक्षिक योग्यता ८वीं है । गिरजा देवी का मायका रमपुरवा म०प्र० है । वह अपने गाँव में घर का कार्य व पढ़ाई-लिखाई का कार्य करती रही हैं । शादी के बाद ससुराल में घरेलू कार्यों के अलावा अन्य कुछ करने का मौका नहीं मिला। इनके दो लड़के व एक लड़की है । परिवार के पालन पोषण हेतु यह स्वयं तथा इनके पति मजदूरी करते थे । अप्रैल ०३ से संचालित पैक्स परियोजना के तहत **कृष्णार्पित सेवाश्रम** के कार्यकर्ता सर्वे के लिए गाँव आये । कार्यकर्ताओं ने गाँव के लोगों के साथ बैठक की तथा परियोजना के उद्देश्यों से लोगों को अवगत कराया । धीरे-धीरे गाँव से सम्पर्क बढ़ता गया महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने की दिशा में स्वयं सहायता समूह निर्माण के लिए भी प्रेरित किया गया । गिरिजा देवी हमेंशा संस्था कार्यक्रमों में भाग लेती रहीं तथा समझ बनाती रहीं । अब तक क्षेत्र में १०-१२ स्वयं सहायता समूहों का गठन हो चुका था । दिनाँक २२.१२.०३ को संस्थान द्वारा आयोजित जनसुनवाई में स्वयं सहायता समूहों नें अपनी समस्याओं को जिलाधिकारी महोदय के समक्ष रखा । गिरजा देवी इस प्रक्रिया को देखकर बहुत प्रभावित हुईं और उन्हें लगा कि मुझे भी स्वयं सहायता समूह से जुड़ना चाहिए । उन्होने संस्था की एक महिला कार्यकर्ता से इस सम्बन्ध में चर्चा की तथा समूह गठन का आग्रह किया । २७.२.२००४ को १४ महिलाओं ने मिलकर समूह का गठन किया । गाँव के ब्राम्हण परिवार की महिलाओं ने उनका अपमान भी किया तथा यह भी कहा कि हम देखती हैं कि समूह कैसे चलाओगी। अपने खेंतो में तुम्हें कभी पैर नहीं रखने देंगी । परन्तु गिरजा देवी ब्राम्हण परिवार की महिलाओं से जरा भी भयभीत नहीं हुईं तथा संस्थान की गतिविधियों में बराबर भाग लेती रही । धीरे-धीरे वह समूह की कार्यवाही लिखना, हिसाब-किताब करना सामुदायिक कार्यकर्ता से सीखती रहीं । गिरजा देवी अपने समूह को मजबूत कर दूसरे गाँव भी समूह बनाने जाने लगी तथा **यमुना स्वयं सहायता समूह** का गठन गोविन्दपुर ग्राम में किया । समूह की प्रत्येक बैठक में गिरजा देवी अपने साथ जुड़ी महिलाओं को लेकर सहभागिता करती रही । समूह में आन्तरिक लेन-देन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई । गिरजा देवी ने समूह से २५०० रु० का ऋण लेकर खली-कना का व्यवसाय शुरू किया, इससे उन्हें लगभग ५०० रु० का शुद्ध लाभ महीने में होने लगा । रोजगार को आगे बढ़ाने की दिशा में ठोस रणनीति बनाई । इसके लिए समूह को सी०सी०एल० की प्रक्रिया से जोड़कर १८००० रु० की ऋण की मांग की । वह स्वयं अपने पति के साथ इस व्यवसाय को बड़े पैमाने पर करना चाहती हैं । कृषि कार्यों की मजदूरी के स्थान पर वह इस व्यवसाय को बेहतर मानती हैं । वह समूह तथा संस्थान कार्यकर्ताओं के प्रति आभार प्रकट करती हैं जिन्होंने उन्हें एक नई दिशा प्रदान की।

मजदूर से मालिक बनी
शीलरानी सहरिया आदिवासी

टपरियन की शीलरानी सहरिया ०४ नवम्बर २००३ को गिरार सहरिया बस्ती में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम में एक ऐसी चिनगारी के रूप में सामने उभरी थी कि जिसने मडावरा ब्लाक के १६०० सहरिया परिवारों के घर अन्त्योदय अन्न योजना पहुँचायी थी । जिससे आज उनको २/रू० किलो गेंहू ३/रू० किलो चावल कुल ३५ किलो अनाज ८२/रूपये में मिल रहा है । दो जून की रोटी सुरक्षित है । पट्टे की भूमि में कब्जा मिलने से खेत की मालिक भी बन गयी है । शीलरानी की पहल से टपरियन गाँव में ६ जनवरी २००४ को **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान मड़ावरा** द्वारा **लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह** का गठन किया गया जो वर्तमान तक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक गिरार से संचालित है और समूह की भारतीय स्टेट बैंक शाखा से जुड़ने की तैयारी चल रही है ताकि समूह सी०सी०एल० योजना का लाभ ले सके, उद्यम कर सके ।

शीलरानी अपनी मुर्गियों के साथ

शीलरानी ने दिनाँक १६/७/०५ को समूह से २००/- मुर्गी पालन हेतु ऋण लिया था । शीलरानी के घर में आज १७ नग हैं जिनमें से ०७ नग मुर्गा हैं । शीलरानी का घर अब भरा-भरा सा दिखता है । शीलरानी भले ही खाने के लिए थालियाँ न ले पायी हो, अपनी गृहस्थी को न बढा पायी हो लेकिन उसके आंगन में खेलती मुर्गियाँ मुस्कान बढा रही हैं । वह पैसा बचाने की कला सीख गयी है ।

शीलरानी कहती है मुर्गियन में बहुत फायदा है दीदी, हमाव घर तौ इनईं से भर गओ, आंगे हमें मुर्गी ही खरीदने ।

एक दूसरे उद्यम में अपने बेटे को लगा दिया है उसने समूह से ६००/रूपये लेकर तथा १००/रुपये घर से मिलाकर गुली खरीदी और १४००/रुपये में बेच दी थी । ८ दिन में ही छोटेलाल पुत्र शीलरानी ने अपनी माँ को पैसे लौटा दिये और शीलरानी ने समूह को । छोटेलाल को अब लकड़ी तोड़ने, बेल तोड़ने जंगल नहीं भटकना पडता । वह कक्षा ८ पास है । अपनी दूकान में बैठता है । बराठा के श्री राम साहू उसे माल दे जाते हैं । दूकान बढ़ रही है । छोटेलाल के यहाँ-हरीनगर, बड़वार, सैमरखेड़ा से खरीददार आते हैं । प्रतिदिन लगभग १००/- की बिक्री हो जाती है ।

शीलरानी के पास नसबंदी केस का ४.६८ एकड़ का पट्टा है । वह और उसके पति मिहीलाल अपने खेत को सँवारते रहते हैं । एक वक्त था जब शीलरानी के घर में समा-फिकरा की रोटियाँ बनती थीं और सभी उसको भुखमरी के दिनों में खाते थे । किन्तु आज शीलरानी अपने मुर्गी के बच्चों को चावल चुगाती है । शीलरानी के कदम उसकी लोक प्रियता के कारण बढ रहे हैं । ०४ नवम्बर २००४ को जिलाधिकारी श्री एम० पी० अग्रवाल ने गिरार में भूख-गरीबी के विरूद्ध उठायी आवाज के लिए शीलरानी को शाल -श्रीफल देकर सम्मानित किया था । साधन सहकारी समिति के चुनाव में पति मिहीलाल को धौरीसागर सोसायटी द्वारा उपाध्यक्ष चुना गया है ।

शीलरानी में नेतृत्व का गुण है । वह अब अपने घर की स्थिति को सुधारने के लिए उद्यम की ओर मुड़ रही है । शीलरानी अपने समूह की कोशाध्यक्ष है । समूह के माध्यम से शीलरानी की आँखों में एक बडा सपना झलकता है और शीघ्र ही वह उसे पूरा भी कर लेगी ।

खदानों की जिल्लत भरी जिन्दगी से मुक्ति मिली

ललितपुर जनपद की आखिरी सीमा घनघोर जंगल की गोद में बसी ग्राम पंचायत-मदनपुर जहाँ का गुलाबी पत्थर जयपुर तक जाता है, इसी ग्राम पंचायत का मजरा है 'दारूतला' जिसमें ६० सहरिया मजदूर परिवार रहते हैं। दारूतला के सहरिया आदिवासी परिवारों की जिन्दगी अब तक जंगल और पत्थर खदानों के इर्द-गिर्द घूमती रही है, जिसके कुछ अवशेष श्री कुंजी और श्री पप्पू सहरिया में टी०बी० वायरस के रूप में अभी भी मौजूद हैं। खदानों में आदिवासी परिवार खप रहे हैं।

पैक्स कार्यक्रम के तहत **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान मड़ावरा** द्वारा दारूतला गाँव में **"जय दुर्गा स्वयं सहायता समूह"** का गठन किया गया। समूह का खाता भारतीय स्टेट बैंक शाखा-महरौनी में संचालित है। समूह सप्ताह में प्रति सोमवार बैठक करता है।समूह की सदस्य हीराबाई, सीतारानी, केशरवाई ने दिनाँक २७/१०/०५ को १००-१०० रुपये समूह से ऋण स्वरूप लिये थे। हीराबाई की १ मुर्गी अण्डे दे रही है, सीतारानी ने अपने मायके-सोल्दा से १ मुर्गा व १ मुर्गी खरीदी है और उधर केशरबाई की मुर्गी ने ८ अण्डे दे दिये हैं। अब तीनों को एक नया उद्यम मिल गया है तथा पत्थर खदानों से बचने का एक अवसर भी। लकड़ियों के बोझ से जब भी थकान होगी कि सभी अपनी-अपनी मुर्गियो के संग सुस्ता लेंगी। जब इनकी संख्या बढ़ जायेगी तो फिर उनके बच्चे जो आज स्कूल जाने की बजाय माँ-बाप के साथ खदान पर गिट्टी तोड़ते हैं तो कम से कम उन्हें एक नयी दिशा तो मिल सकेगी। दारूतला गाँव में विधवा महिलाओं की संख्या ज्यादा है। जिन्दगी बेबसी का पर्याय है किन्तु एक आशा की किरण जग रही है। स्वयं सहायता समूहस से संगठित होने का मौका मिला है।

समूह गाँव में व्याप्त अन्य समस्याओं पर भी चिन्तन करता है तथा प्रार्थना पत्र लिखता रहता है। उद्यम के रूप में बकरी पालन व मुर्गी पालन समूह की सोच है। पत्थर खदानों से बचने के लिए महिलाएं अब साहस जुटा रही हैं। खदान मालिक अब जबरन काम नहीं कराता है कुछ बदलाव भी आने लगा है। दिनाँक २४.१२.२००५ को समूह का ४७००० रुपये का सी०सी०एल० हो गया। दिनाँक ६.३.२००६ को समूह ने ८८०० रुपये ऋण के रूप में धनराशि प्राप्त भी कर ली है। इस धनराशि से समूह की महिलाएं अपने उद्यम को बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहीं हैं।

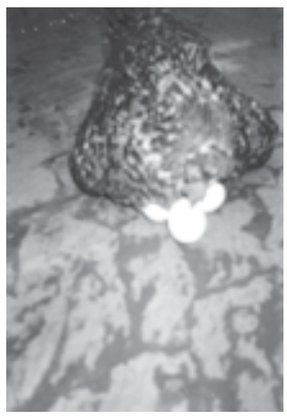

स्वरोजगार के साथ गाँव की समस्याओं को उठाने का कार्य भी स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से होने लगा

धौरीसागर कुल ०५ मजरों की ग्राम पंचायत है । धौरीसागर का चंदेल कालीन तीन सौ एकड़ का तालाब धौरी के १५० ढीमर परिवारों को रोजी-रोटी दे रहा है । गाँव के बुजुर्ग लोग बताते हैं कि यहाँ पहले दोगुने ढीमर परिवार थे, किन्तु ज़मीन न होने के कारण और दबंगई के चलते भी लोग शहरो की ओर पलायन करने लगे परिणाम ये हुआ कि धौरी में आज बस्ती बसने की बजाय कम हो गयी है ।

दिनाँक ८/६/०४ को धौरी गाँव में **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान मड़ावरा** द्वारा **'जय ठाकुर बाबा स्वयं सहायता समूह'** का गठन किया गया । इस समूह में अब तक निरन्तर बचत की जा रही है । प्रारम्भ मे कुल १५ सदस्य जुड़े थे जो अभी तक लगातार जुड़े हुए हैं और लेन देन करते हुए आगे बढ़ रहे हैं । यह एक ऐसा समूह है जिसने आन्तरिक लेन देन करके कुल ६६२/रुपये ब्याज कमाया है । समूह की कोषाध्यक्ष ने समूह संचालन में केन्द्रीय नेतृत्व की भूमिका का बखूबी निर्वहन किया है । श्रीमती ज्ञानबाई ने दिनाँक २५/७/०५ को समूह से ३५०/ रूपये तथा २२/०८/०५ को भी १०००/ रुपये समूह से ऋण लिया जिससे ज्ञान के पति श्री कैलाश ढीमर ने किराने की दूकान प्रारम्भ की । दूकान में पति तथा देवर बैठते हैं और जब कोई नहीं होता तो ज्ञान तराजू हाथ में लेती है । ज्ञान के पति को एक स्थायी रोजगार मिल गया है । ज्ञान के पास थोड़ी सी जमीन है जिस पर खेती करके तथा अन्य की जमीन ठेके पर लेकर अपने परिवार का भरण-पोषण करती है । ज्ञान का परिवार संयुक्त है । कक्षा ८ वीं तक शिक्षा प्राप्त ज्ञानबाई गाँव की समस्याओं को भी उठाती है । धौरीसागर में कोई भी ए०एन०एम० नहीं है विगत डेढ़ वर्ष से पद रिक्त पड़ा है । ज्ञानबाई द्वारा लिखे पत्र पर कार्यवाही हुई और धौरी गाँव की गर्भवती महिलाओं को टी०टी० के टीके लगाने के लिए अगस्त में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मडावरा से टीम गयी । ज्ञान व समूह की पहल से गाँव की महिलाओं को स्वास्थ्य लाभ मिला । समूह संगठन की दिशा में पहल कर रहा है और साथ ही उद्यम की ओर बढ़ रहा है । इस समूह का दिनाँक २३.१२.२००५ को ६६००० रुपये का सी०सी०एल० भी हो गया है । शीघ्र ही समूह बैंक से प्रथम किस्त प्राप्त कर बकरी पालन एवं परचून जैसे छोटे-मोटे उद्यमों को बढ़ाना चाहता है ।

सुनीता ने बकरी पालन को जीविका का आधार बनाया

३ जून सन् २००४ को बम्हौरी कला मे **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान मड़ावरा** द्वारा **श्रीकृष्णा स्वयं सहायता समूह** का गठन कर लिया गया था जिसकी कोषाध्यक्ष श्रीमती सुनीता को चुना गया । प्रारम्भ में समूह ३०/ रुपये प्रति सदस्य मासिक बचत करता था। ६माह बाद बचत १००/ रुपये प्रतिमाह प्रति सदस्य कर दी गई । पुनः ६ माह बाद से ५०/ रुपये प्रति सदस्य प्रतिमाह निरन्तर बचत हो रही है । सुनीता के पति ड्राइवर हैं । दो एकड़ की खेती है जिससे परिवार चल रहा है । सुनीता ने दिनाँक १६/१२/०४ को समूह से ५००/ रुपये लेकर तथा १००/ रुपये स्वयं मिलाकर कुल ६००/- की छोटी बकरी खरीदी थी आज १७ माह बाद बकरी की कीमत २०००/ रुपये हो गयी है । सुनीता ने समूह से लिया ऋण ब्याज सहित २ माह बाद वापस कर दिया है । भारतीय स्टेट बैंक के सहयोग से समूह का खाता अब महरौनी शाखा में खुल गया है और ३/६/०५ को समूह का ८६०००/- रु० का सी०सी०एल० हो गया है । सुनीता आशान्वित है, उसकी बकरी बड़ी हो गयी है वह खुश है । दिनाँक २१.१.२००६ को समूह को ४०००० रुपये का ऋण प्रथम किस्त में मिल गया है । इस धनराशि से कुछ महिलाएं दूकानदारी तथा सुनीता ने ऋण लेकर बकरी पालन का कार्य प्रारम्भ किया है । सुनीता बकरी पालन को एक उद्यम के रूप में स्थापित करना चाहती हैं । सुनीता कक्षा ८ वीं तक शिक्षा प्राप्त कर सकी थी वह अपने समूह की कार्यवाही स्वयं लिखती है । समूह प्रति मंगलवार को बैठक करता है । एक छोटा सा प्रयोग बड़े उद्यम का प्रारम्भ होता है ।

गौरिया को सब्जी का धन्धा रास आने लगा

श्रीमती गौरिया अहिरवार उम्र ३८ वर्ष **सती सावित्री स्वयं सहायता समूह** की सदस्य है । दिनाँक १२ अक्टूबर २००४ को दिदौनियाँ गाँव में पैक्स कार्यक्रम के तहत **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान** द्वारा एक स्वय सहायता समूह का विधिवत गठन किया गया था । श्रीमती हुकुमरानी बेवा श्री भजन की अध्यक्षता में समूह नियमित रूप से १० रु० प्रति सदस्य प्रतिमाह बचत कर रहा है । दिनाँक १/८/०५ को गौरिया ने समूह से १०००/- रु० २ माह के लिए ऋण लिया था । गौरिया आँगन में सब्जी की दूकान लगाती है और उसका बेटा सुलतान बाजार में । आज गौरिया के पास समूह की धनराशि चुकाने के बाद १०००/ रु० शुद्ध शेष हैं । गौरिया और सुलतान को सब्जी का धन्धा रास आया है । गौरिया ने अपने बाड़े में बैगन की पौध लगा रखी है । बेटा सुलतान ललितपुर सब्जी मण्डी से माल उठाता है । गौरिया की कोशिश है कि वह अधिक से अधिक सब्जी का स्वयं उत्पादन करे ताकि पूँजी बढ़े । दिनाँक २३.१२.२००५ को समूह का सी०सी०एल० भी ४३००० रु० का हो गया है । समूह को ऋण प्राप्त होने पर गौरिया ऋण लेकर इस उद्यम को बढ़ाना चाह रही हैं । गौरिया की उडान बहुत ऊँची है । समूह ने उसे पर (पंख) दे दिये हैं और उसकी उम्मीदें आगे बढ़ी हैं ।

राजेश का संघर्ष

राजेश के संघर्ष की एक अपनी तरह की प्रेरणास्पद कहानी है । राजेश पुत्र धनीराम उम्र २३ वर्ष, भौंती (मड़ावरा) गाँव के एक निम्न मध्यम वर्ग के परिवार से है । पिता धनीराम ने परम्परागत रोजगार को अपनाकर परिवार का भरण-पोषण किया । राजेश के परिवार में कुल १० सदस्य हैं । परिवार में राजेश सबसे बड़ा है । राजेश की गरीबी ने उसे ९वीं तक पढ़ने दिया और बीच में ही पढ़ाई छोड़कर रोजगार का चिन्तन करने लगा । राजेश को परम्परागत रोजगार रास न आया वह कुछ अलग कर दिखाना चाहता था । हालांकि पिता व मझला भाई नाई गिरी का काम कर रहे हैं । राजेश का मन जोड़-तोड़ में रमता था । उसके पिता बताते हैं कि छोटे में जब किसी का डीजल पम्प सुधारता था तो राजेश गौर से देखा करता था। यही लगन हुनर बन गई और राजेश के हाथ भी धीरे-धीरे प्लास, पाना, आदि औजार चलाने लगे । विश्वास बढ़ता गया । कुछ आमदनी होने लगी किन्तु यह रोजगार मौसमी था । राजेश और उसके साथियों से संस्थान कार्यकर्ता दयाराम की भेंट हुई और भविष्य में स्थायी रोजगार तथा संगठन में काम करने के लिए पैक्स परियोजना के अन्तर्गत **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान** द्वारा संघर्ष स्वयं सहायता समूह का गठन १० जुलाई २००५ को कर लिया गया । सदस्यों ने राजेश को सचिव पद हेतु चुना । समूह का खाता भारतीय स्टेट बैंक, महरौनी में दिनाँक २५.७.०५ को खुल गया । बचत की निरन्तरता व आन्तरिक ऋण जमा नियमों का पालन समूह ने बखूबी किया । बचत की धनराशि से समूह सदस्य गब्बर सिंह पुत्र कालीचरन लुहार ने कपड़ा सिलने की मशीन ले ली थी । गब्बर सिंह नियमित रूप से अपना काम कर रहा है। राजेश को इससे प्रेरणा मिली । दिनाँक ३.१०.०५ को समूह का ऋण स्वीकृत हो गया । दिनाँक २१.०१.०६ को बचत की चार गुनी धनराशि रुपये ८०००/ बैंक से आहरित हुई कि राजेश ने गाँव को ध्यान में रखकर जनरल स्टोल खोलने का प्रस्ताव रखा । सभी ने एकमत से प्रस्ताव का समर्थन किया तथा दूकान रखवाने में मदद की । राजेश बताता है कि दूकान रखने के प्रथम माह में बिक्री कम हुई किन्तु दूसरे माह से लगातार बिक्री बढ़ रही है । आज तो आस-पास के गाँव हंसरा, खेरपुरा, विरौदा, पहाड़ी के लोग भी सामान लेने आते हैं । मनहारी (श्रृंगार) सामान पर ५० फीसदी तथा कपड़ों पर ३० फीसदी फायदा होता है । उधारी का प्रतिशत पूंछने पर राजेश का कहना है कि ६० फीसदी उधारी है किन्तु वापिसी का क्रम चलता रहता है । इस बरसात में राजेश ने बरसाती जूते-चप्पल लाने की योजना बनायी है । गरीबी ने भले ही राजेश को पढ़ने नहीं दिया किन्तु आगे बढ़ने से नहीं रोक पायी । राजेश से छोटा भाई विद्यालय जाता है और छोटी बहने भी पढ़ने जाती है । राजेश का कहना है - ***हम तौ नईं पढ़ पाये लेकिन अपने बैन, भईयन खौ खूब पढ़ायं, जीमें आगें चलकें अच्छी नौकरी करबें*** राजेश की जिजीविषा, राजेश की मेहनत अवश्य रंग लायेगी । उसके सारे सपने साकार होंगे क्योंकि समूह का मजबूत आधार जो उसे मिल गया है ।

कस्तूरीबाई के समूह ने छोड़ी सामंतो की गुलामी

सीरोन ग्राम पंचायत का पिसनारी गाँव सहरिया आदिवासियों का गाँव है । आजादी से निरन्तर पिसनारी गाँव में दबंगों का आतंक रहा है । सहरिया आदिवासी परिवार गाँव के दबंग ठाकुर परिवारों के यहाँ बंधुआ मजदूरी करने को मजबूर रहे हैं । बुजुर्ग आदिवासी महिला नन्ही बहू के अनुसार ठाकुरों को जांत द्वारा यानि पत्थर की चकिया से आटा पीसकर देने के बाद मजदूरी में सूखा अनाज, ज्वार, जौ, कोदों से पेट भरने की वर्षों की दुखद कहानी है । आटा पीसकर देने की इस कुप्रथा के नाम पर ही गाँव का नाम पिसनारी पड़ा । पूरे गाँव के ४० परिवार सहरिया महिलाएं ठाकुरों को आटा पीसकर देती थीं । आदिवासी महिलाएं गोबर, चारापानी, मवेशी देखभाल, निराई, गुड़ाई, खेत की रखवाली साहित आटा पीसकर देने का कार्य भयवश व पेट भरने के लिए करती थीं । पुरुष लोग भी हल जोतने व फसल आदि का सारा कार्य करते थे । जंगल के किनारे बसे पिसनारी सहरिया गाँव में **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान** मड़ावरा ने पैक्स प्रोग्राम के तहत सम्पर्क व अध्ययन के बाद चेतना जागरूकता के लिए कार्य किया तथा स्वयं सहायता समूह का निर्माण किया । समूह निर्माण के समय दबंगों ने विरोध किया था किन्तु महिलाएं संस्थान गतिविधियों से लगातार जुड़ती गयीं । समूह का गठन किया । रानी लक्ष्मीबाई स्वयं सहायता समूह का गठन दिनाँक १६.७.०३ को किया गया । एक-एक रुपया की राशि प्रतिदिन बचाने को प्रेरित करके तीस रुपया प्रतिमाह समूह में जमा करने का कार्य किया गया । अब समूह में आपसी लेन-देन शुरू है । कस्तूरी बाई सहरिया समूह की कोषाध्यक्ष है । कस्तूरी बाई ने ३०० रुपये समूह से ऋण लेकर पहली बार पांच मुर्गी खरीदीं । दूसरी बार में चार मुर्गी खरीदीं ।

आज उसके पास १५ मुर्गियाँ हैं जिनकी कीमत लगभग १५०० रुपये है । हालांकि मुर्गियों के कई छोटे बच्चों को कुत्ते और बिल्लियों ने शिकार बनाया है जिससे उसे नुकसान हुआ । कस्तूरी बाई ने इससे सीख लेकर पुनः समूह से १००० रुपये ऋण लेकर अचार (चिरौंजी) खरीद की और उससे आठ दिन में घर बैठे ही ३०० रुपये का फायदा लिया । कस्तूरी बाई सूक्ष्य उद्यम के बारे में सोचने समझने लगी है और भविष्य में अधिक ध ानराशि के साथ बड़ा उद्यम तैयार करने की मानसिक तैयारी कर रही है । इस समूह की अन्य महिलाएं भी उससे प्रेरणा ले रही हैं, उनकी सोच विकसित हो रही है ।

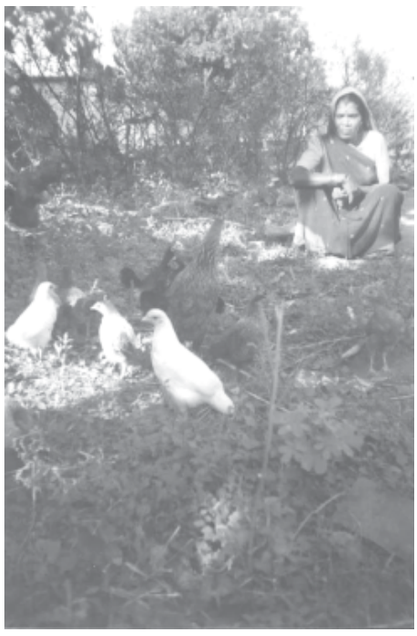

अब वह किसी दबंग के यहाँ काम पर जाने के लिए मजबूर नहीं हैं । समूह के संगठित प्रयास से स्वतन्त्र रूप से जीविका के लिए कुछ करने का उत्साह कस्तूरी बाई में साफ दिख रहा है ।रानी लक्ष्मी बाई स्वयं सहायता समूह में अब कुल बचत धनराशि १२१५० रुपये है । अपने ही पैसे से समूह उद्यम करना सीख रहा है । इस समूह की रचनात्मक गतिविधियों से प्रेरणा पाकर इसी गाँव में दो अन्य समूह भी गठित हो गये हैं ।

रानी लक्ष्मीबाई स्वयं सहायता समूह का भारतीय स्टेट बैंक शाखा महरौनी (ललितपुर) से सी०सी०एल० ६४००० रुपये का हुआ है । दिनाँक २१ जनवरी २००६ को अपनी बचत का चार गुना रुपया ३००००/- बैंक से ऋण के रूप में समूह को प्राप्त हुआ है । इस धनराशि से समूह के सदस्यों ने उद्यम के रूप में स्थापित होने के लिए बकरी पालन करना उपयुक्त समझा है । पिसनारी गाँव के अन्य समुदायों की महिलाओं के लिए यह सहरिया महिलाएं एक उदाहरण के रूप में हैं ।

नवयुवकों के प्रेरणा केन्द्र गब्बर

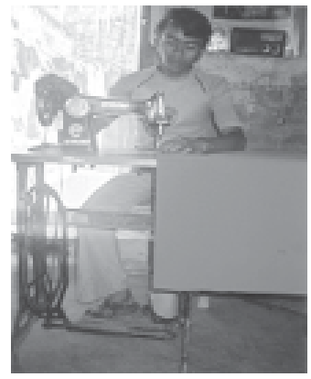

दिनाँक १०/०७/०५ को ग्राम-भैंती में **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान मड़ावरा** द्वारा गठित **संघर्ष स्वयं सहायता समूह** पूर्ण साक्षर है। इस समूह में बी०एस०सी० से कक्षा ५ वीं उत्तीर्ण सदस्य हैं। सभी सदस्य कृषि कार्य में संलग्न हैं। समूह के गब्बर पुत्र कालीचरन सदस्य ने सितम्बर २००५ में समूह से १०००/ रुपये ऋण लिया और २/ रुपये प्रति सैकड़ा मासिक ब्याज सहित १० नवम्बर २००५ को ऋण वापस कर दिया है। गब्बर कुल ५ भाई- बहिन हैं। भाइयों में गब्बर सबसे बड़े हैं। ९ वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। अब गाँव में युवा संगठन दल में अच्छी भूमिका निभा रहे हैं। समूह से जुड़ने पर पहली बार ऋण लेकर तथा २००/ रुपये और मिलाकर कुल १२००/ की पुरानी रीटा पैरदान सिलाई मशीन खरीद ली है। सिलाई करके ऋण अदा कर दिया है। अब गब्बर का विचार है कि वह समूह से और धनराशि लेकर कपड़े सिलने के साथ-साथ कपड़ा बेचने का भी काम करें। दिनाँक ३.१०.२००५ को समूह का सी०सी०एल० भी ७२००० रु० का हो गया है। समूह को दिनाँक २१.१.२००६ को प्रथम किश्त के रूप में ८००० रुपये का ऋण भी प्राप्त हो गया है। वर्तमान में गाँव में एक भी दूकान कपड़ों की नहीं है। गब्बर के पास एक कला है कपडों को आकार में बाँधने की। इस बूते पर गब्बर ने समूह से पुनः ऋण प्राप्त किया है तथा अपने धन्धे को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है। वह एक सफल उद्यमी के रूप में उभरेगा इसमें सन्देह नही। गब्बर से गाँव के अन्य नव युवक प्रेरणा ले रहे हैं। सृजनात्मक सोच युवकों में पैदा हो रही है। समूह मे शामिल युवक सप्ताह में १ दिन कीर्तन भजन भी गाते हैं।

बढ़ने लगी है कीर्ति

मड़ावरा ब्लाक से ९ किमी० दूर स्थित ग्राम-सौंरई का नाम ही सौंर, सहरियों के नाम पर पड़ा। इस गाँव में ९० परिवार सहरियों के हैं किन्तु इस संख्या के बाद भी इस गाँव में सबसे दयनीय स्थिति सहरियों की है। उनके खेतों पर लगे महुआ, अचार के पेड़ो की ठेकेदारी दबंग करते हैं। बस्ती में सबसे कच्चे घर सहरियों के हैं, उसके बाद में छात्रवृत्ति सहरियों के बच्चों की आती है। साक्षरता दर में अन्तिम चरण पर यही समुदाय आता है। सबसे ज्यादा मेहनत और ३०-३५ रुपये की मजदूरी यही पाते हैं। यहाँ के दबंगों के कारण सहरिया मौन रो रहा है। **बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान** के प्रयास से दिनाँक २८.६.०५ को कीर्ति स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। नियमित बैठकों के कारण गाँव की स्थिति-परिस्थिति तथा सहरियों के जीवन से परिचय हुआ। प्रारम्भ में मासिक बैठक होती थी किन्तु बाद में प्रति सोमवार की बैठक आयोजित होने लगी। समूह की समी महिलाएं अंगूठा लगाती हैं किन्तु मौखिक ही पाई-पाई का हिसाब रखती हैं। जंगल से सूखी लकड़ी लाकर मड़ावरा बेचना, बाजार से सामान खरीदकर घर ले जाना और फिर रोटी बनाना-खाना। शाम को फिर जंगल चले जाना रोज की यही दिनचर्या है। सोमवार के दिन सभी बहने सरकारी नियम से हटकर सप्ताह में एक दिन अवकाश मनाती हैं। प्रति सोमवार को बैठक अवश्य करती हैं। चाहे कार्यवाही लिखी जाये या नहीं। सदारानी की सक्रियता और अन्य सदस्यों के सहयोग को देखकर दूसरे समूहों में भी चेतना आयी है। इससे पूर्व में गठित आरती समूह ने भी सोमवार को बैठक नियमित कर दी है। दिनाँक २२ दिसम्बर ०५ को समूह का ऋण स्वीकृत हो गया। समूह की पहली किश्त रुपये ८४००/ बैंक से आहरित हुई, जिसकों बारह में से ७ सदस्यों में वितरित किया गया। सुन्दर, गुलाबरानी, श्रीबाई, मनबू ने बकरियाँ खरीद ली हैं। सीमा ने परचून की दूकान रख ली है और रातरानी ने अपने बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए कए गाय खरीद ली है तो वहीं तेजरानी ने खेती करने के लिए एक बैल खरीदा है। एक बैल उसके पास पहले से था। सभी खुश हैं। दिन बहुरेंगे तो अतिपरिश्रम से छुटकारा मिलेगा। बच्चे पढ़ेंगे और विकास से जुड़ेंगे। आज समूह संगठन से सब परिचित हैं। महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है। अधिकारियों से बेकाबू होकर अपनी समस्यायें बताना आ गया है। भविष्य की सुन्दर योजनायें बनने लगी हैं और समूह की अध्यक्ष सदारानी जब कहती है कि ''हमें समूह कबऊँ नहीं खतम करनें, हमें तौ अच्छी गैल आ मिल गई'' तो सुनकर अच्छा लगता है कि पैक्स परियोजना अपने उद्देश्य में सफल हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सदारानी, सुन्दर, पार्वती की नारेबाजी जान फूंक देती थी। आज सदारानी, पार्वती का नाम पूरा गाँव जानता है। कीर्ति बढ़ रही है अब उनके घरों में फैली गरीबी को भागना ही पड़ेगा।

पलायन से मुक्ति मिली ममता के परिवार को

धौरी सागर ग्राम पंचायत के धौरी मजरे में ढीमर समुदाय के १३० परिवार हैं जो वहाँ पर बने चन्देल कालीन लगभग ३०० एकड़ के तालाब से अपनी जीविका चलाते हैं । एक समय था जब इस मजरे में ढीमर समुदाय के परिवारों की संख्या और ज्यादा थी । धीरे-धीरे स्थाई आजीविका की तलाश में सैकड़ों परिवार मड़ावरा, महरौनी, सैदपुर, ललितपुर पलायन कर गये। क्योंकि तालाब से निर्भरता कम होती गई । कभी दंबगों की मछली व सिंघाड़ा उत्पादन की ठेकेदारी तो कभी अति वर्षा से तालाब की सम्पदा का नष्ट होना होता रहा । इस वर्ष भी अति वर्षा से लाखों रुपयों का सिंघाड़ा तालाब में ही सड़ गया जिसका खामियाजा इस समुदाय को चुकाना पड़ा । इसी गाँव की ममता देवी अपने तीन बच्चे और पति के साथ घर का काम करती जिन्दगी व्यतीत कर रही थी कि पैक्स कार्यक्रम के तहत बुन्देलखण्ड सेवा संस्थान मड़ावरा ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में समूह बनाने की बात जब धौरी गाँव में रखी तो सबसे पहली महिला ममता ही थी जिसने हाँ की, क्योंकि समूह की थोड़ी सी समझ उसने अपने मायके सागर (मध्य प्रदेश) से बचपन में प्राप्त कर ली थी । ममता की पहल और सक्रियता से दिनाँक ८ जून २००४ को एक १५ सदस्यीय जय ठाकुर बाबा स्वयं सहायता समूह का गठन हो गया। ममता देवी समूह की सदस्य है । दिनाँक ३.६.०५ को ममता ने समूह से ३००० रुपये ऋण लिया दो माह के लिए । ममता को अपने पति का बराबर सहयोग मिला । सागर से कपड़े खरीदकर लाई और घर में दूकान रख ली । गाँव में कपड़े की पहली दूकान रखने का श्रेय ममता को जाता है । ममता घर में दूकान चलाती और पति साइकिल पर कपड़े बांधकर फेरी लगाने आस-पास के गाँव सागर, सेमलखेडा, किशनपुरा, सकरा, टौरी जाता था । मेहनत रंग लाई ममता ने दो माह बाद समूह का ब्याज सहित रुपया वापस कर दिया। घर में आमद हुई समूह की बैठक में ममता ने फिर से ३००० रुपये लेने का प्रस्ताव रखा । इन रुपयों से ममता राखी व खिलौनों की दूकान रखना चाहती थी । समूह ने ममता के वित्तीय अनुशासन को देखते हुए २००० रुपये पुनः देने का समर्थन किया । ममता ने दमोह से इस बार राखी व खिलौने मंगवाये । रक्षाबंधन के अवसर पर खूब बिक्री हुई । ममता का विश्वास दिनों दिन गहरा होता जा रहा था । किन्तु इसी वर्ष ममता के साथ एक दुर्भाग्य जुड़ा । इस वर्ष वारिश में उसको धूप, बरसात, ठण्ड से बचाता घर गिर गया । ममता को दूसरे का घर किराये से लेना पड़ा । दूकान पर असर पड़ा, परेशानियाँ बढ़ गयी, खर्च भी बढ़ गया किन्तु ममता और उसके पति जूझते रहे । दूकान की आय से ममता ने घर सुधरवा लिया ।

आज ममता अपने घर में है । पति ने कपड़े सिलने की मशीन खरीद ली है । ममता को सिलना तो नहीं आता लेकिन काज बटन और तुरपन करने में पति की मदद करती है । स्थान के अभाव में ममता जिस घर में रहती है उसी घर के एक कोने में दूकान सजाये है । ममता की आंखों में एक बड़ी दूकान रखने का सपना है । उसकी जिजीविषा से लगता है वह उसे पूरा कर लेगी । ममता ने दूसरी बार भी समय से समूह को धनराशि लौटा दी है । ममता ने समूह का कर्ज चुकाने के बाद अपनी ५००० रुपये की पूंजी बना ली है । इस पूंजी से ममता ने मछली पकड़ने का जाल खरीद लिया है, जिससे आमदनी में और इजाफा हुआ है । ममता से प्रेरणा पाकर समूह के अन्य सदस्यों ने भी अपनी गरीबी दूर करने के लिए ममता की तरह अतिरिक्त मेहनत करने का मन बना लिया है । साथ ही गाँव में एक दूसरा समूह भी बन गया है । भारतीय स्टेट बैंक शाखा महरौनी से इस समूह को ६६००० रुपये का ऋण स्वीकृत हुआ है । दिनाँक १०.०४.०६ को इस समूह को बैंक से ४०५०० रुपये का ऋण प्राप्त हुआ है, जिससे समूह ने महुआ तथा अचार की खरीद करके एक सफल उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कुछ करने की ललक ने मार्ग दिखाया

श्रीमती सुनीता पत्नी श्री किशोरी लाल भारतपुर गाँव में ब्याही हुई हैं । सुनीता बताती हैं कि १२ वर्ष की उम्र में मेरी शादी हुई थी जब मैं यहाँ आई तो मेरा घर घास की झोपड़ी का था । पति पत्थर खदान का काम करते थे, मेरा सारा परिवार आज भी पत्थर का कार्य करता है । १७ वर्ष की उम्र में मैं माँ बनी तब मुझे लगा कि कब तक झोपड़ी में रहेंगे कुछ बचत करके छोटा सा घर बना ले । मैं बटाई के खेत लेकर कुछ भोजन का इन्तजाम करती, पति पत्थर के काम से पैसा कमाते और धीरे-धीरे थोड़ी बहुत स्थिति सुधरने लगी । तब तक मैं दो बेटे तथा एक बेटी की माँ बन गई और पति की सलाह से मैने परिवार नियोजन करवा लिया। मुझे लगता था कहाँ से खर्च आयेगा, कैसे चलेगा मेरा परिवार, हमेशा चिन्ता रहती थी । भूमिहीन होने के कारण माल-मवेशी रखना भी मुश्किल था। कहाँ किसके खेत से घास-भूसा लायेंगे । लेकिन हमारी चिन्ता को नया रास्ता मिला । **दामिनी समिति द्वारा** स्वयं सहायता समूह का गठन प्रारम्भ हुआ । दिनाँक १८.१०.२००३ को मेंरे गाँव में **कंचन गिरि स्वयं सहायता समूह** का गठन किया गया । इसमें १३ महिलाएं सम्मिलित हुईं । मैने भी समूह की सदस्यता प्राप्त की । हमें समय-समय पर प्रशिक्षण के लिए शिवरामपुर व रानीपुर भट्ट जाने का अवसर मिला । वहाँ से जानकारी मिली (बुआ-भतीजी फिल्म देखकर) और समूह की अध्यक्ष सुमन बहन के प्रोत्साहन से मैंने अगस्त २००४ से स्वयं व्यवसाय करने का मन बनाया जिसमें मेरे पति ने मेरा पूरा सहयोग किया ।

सुनीता बहन ने बताया कि सर्वप्रथम मैने ११०० सौ रुपये समूह से ऋण लेकर बिरसिंहपुर मध्य प्रदेश से विसातखाने का सामान लाई वहाँ मेरा मायका था **"एक पन्त दो काज"** वाली कहावत कहते हुए सुनीता ने कहा मायके भी हो आई साथ ही मुझे लगा कि यहाँ सामान ज्यादा अच्छा मिलता है, ज्यादा पसंद आयेगा ग्राहक को इस कारण वहाँ से सामान लायी । खर्च के बारे में सुनीता ने बताया १५० रुपये मेरा खर्च लगा और १ माह में २४०० रु० का सामान बेचा । दोबारा १८०० रु० का सामान देवर और पति से कानपुर से मंगवाया, २५० रु० खर्च आया तथा ३००० रु० का बेचा । अब स्थानीय भरतकूप से ही हर ८वें १०वे दिन ५०० रु० का सामान मंगा लेती हूँ । स्वयं भी जाती हूँ । बेचने के तरीके में कहती है कि पंडितो के टोला में उधार और चिक-चिक होती है तो वहाँ नहीं जाती, बांकी सब जगह जाती हूँ और घर से भी बहने चूडी पहनने एवं सामान ले जाने के लिए आती हैं । इस प्रकार सुनीता ने बताया कि आज मुझे बहुत खुशी है कि मैं एक अनपढ़ होकर भी अपने परिवार का भरण-पोषण अच्छे से कर सकती हूँ । मैं ही नहीं मेरी तरह अन्य बहने संकोच छोड़कर कुछ करने की सोचे तो सफलता जरूर मिलेगी । आज खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था है । पास में थोड़ी पूँजी भी हो गई है । बच्चे पढ़ते हैं । मैने पूरा लिया गया ऋण ब्याज सहित वापस कर दिया है ।

सरोज को मिला एक नया रास्ता

श्रीमती सरोज पत्नी श्री सोमनाथ दर्जी पथरौड़ी की निवासिनी हैं । सरोज के पति सिलाई का कार्य करते हैं । दामिनी समिति शिवरामपुर द्वारा जब गाँव में स्वयं सहायता समूहों का निर्माण किया गया, तो सरोज भी समूह की सदस्य बनी । इनके समूह का नाम रानीलक्ष्मी बाई स्वयं सहायता समूह है । यह बराबर समूह की बैठकों में आती हैं तथा नियमित बचत राशि जमा करती हैं । जनवरी २००४ में स्वयं सहायता समूह की बैठक में सरोज को समूह की महिलाओं ने प्रेरित किया कि तुम्हें भी पति के साथ सिलाई के कार्य में सहयोग करना चाहिए, इससे तुम्हारे परिवार की आर्थिक स्थिति और मजबूत हो सकती है । पहले तो सरोज को दूकान में बैठने में संकोच होता था । लेकिन धीरे-धीरे उसका संकोच छूटा और वह पति के कार्य में हाथ बटाने लगी । पहले उसने काज बनाना, बटन लगाना एवं तुरपाई जैसे कार्य किये, धीरे-धीरे सिलाई भी सीखा । आज पति-पत्नी मिलकर गाँव से बाहर सड़क के किनारे अपनी दूकान में कार्य कर रहे हैं । मौसम के अनुसार लगभग १०० से ३०० रुपये तक का कार्य कर लेते हैं । सरोज का कहना है कि अगर समूह का सहयोग व बहनों से प्रेरणा न मिलती तो शायद मैं सिलाई न सीख पाती । आज सरोज का परिवार काफी खुश है ।

पत्नी की सलाह से पति को परदेश जाने से मुक्ति मिली

अप्रैल २००३ से पैक्स कार्यक्रम के अन्तर्गत गाँव की विभिन्न समस्याओं को लेकर जनपैरवी, पंचायत सशक्तिकरण एवं महिला सशक्तिकरण का कार्य प्रारम्भ किया गया । महिला सशक्तिकरण के तहत समूह बनाने की प्रक्रिया में जनपद चित्रकूट मुख्यालय से १५ किमी० की दूरी पर उत्तर दिशा में बसे ग्राम-पथरौड़ी में भी समूह बनाने का कार्य किया गया । **दामिनी समिति** द्वारा इस गाँव में तीन स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया । माँ महेश्वरी स्वयं सहायता समूह की श्रीमती शोभा देवी पत्नी श्री हीरालाल भी इसी गाँव से सम्बन्ध रखती हैं । इनके ३ लड़की व २ लड़के हैं । इनके पति कार्य की तलाश में सूरत चले जाते थे । इनके पास जीवन-यापन के लिए एक भैंस थी । लेकिन सारा दूध व मट्ठा घर खर्च में ही चला जाता था । समूह गठन के बाद इन्हें प्रोत्साहित किया गया कि तुम एक समय का दूध बेंचकर अपना नमक तेल का खर्च निकाल सकती हो और खोवा बनाने का काम भी धीरे-धीरे शुरू कर सकती हो । इस प्रकार से शोभा ने स्वयं सहायता समूह से १००० रु० निकलवाकर अपने पति को परदेश जाने से रोक लिया और दूसरे गाँव से भी दूध लाने का कार्य शुरू करवा दिया । दोनो पति-पत्नी ने मिलकर खोवा बनाने का कार्य प्रारम्भ किया तथा सीतापुर व कर्वी में बेंचने लगी । शोभा का कहना है कि इस धन्धे में सीजन के अनुसार लाभ मिलता है कभी कम कभी ज्यादा । इस प्रकार से दूध व खोवा के धन्धे को चलाते हुए शोभा ने स्वयं की कमाई से एक भैंस और खरीद ली है । आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है । बच्चे विद्यालय पढ़ने जाते हैं और इस प्रकार से शोभा के पति का परदेश जाना रुका और दोनो खुशी से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं ।

बीमारी ने किय प्रेमा के सपने चकनाचूर

श्रीमती प्रेमा पत्नी श्री देशराज यादव अपने ४ बच्चों के साथ ग्राम पंचायत पडरी में रहती है । दो बेटियाँ एवं दो बेटे हैं जिसमें दोनों बेटियाँ १ बेटा शिक्षा ग्रहण कर रहे है, तथा बडा बेटा कुछ नही करता । कभी कभार मजदूरी करना या गाँव से बाहर जाकर काम करना घूमना उसकी दिनचर्या है । प्रेमा को मात्र एक बीघा ज़मीन अपने हिस्से में मिली है । पति ट्रक ड्राइवर है जब जहाँ मन आया ट्रक चलाते हैं । वह बटाई की खेती से अपना जीवनयापन करती है । **दामिनी समिति शिवरामपुर** द्वारा जब स्वयं सहायता समूह निर्माण की प्रक्रिया चलाई गई तो प्रेमा ने भी बैठकों में भाग लिया। दिनाँक २०.७.२००४ को अंजनी स्वयं सहायता समूहा का विधिवत गठन किया गया । प्रेमा ने भी समूह की सदस्यता प्राप्त की । स्वरोजगार से जुड़ाव प्रेमा की हार्दिक इच्छा थी परन्तु सामाजिक बन्धन के कारण काफी समय स्वरोजगार शुरू करने में लगा । अनेक बार विचार मन्थन करने के बाद मई २००५ को प्रेमा ने समूह से १६००/ रुपये ऋण लेकर अपने पति के साथ कर्वी जाकर विसातखाना का सामान खरीदा और घर में दूकान सजाकर बैठ गई । मई-जून मे शादी विवाह के अवसर में अच्छी दूकान चली । प्रेमा का कहना है कि लगातार ४५ दिन की बिक्री से मैने १६००/ रुपये ऋण वापस किया । लगभग २०००/ रुपये का लाभ हुआ, कुछ सामान रखा है जो लगभग ६००/ रुपये तक का होगा । वर्तमान में बीमारी व कृषि कार्य के कारण दूकान बन्द है । पुनः शीघ्र ही शुरू करने का मन है, क्योकि इस समय शादी, गवन होते हैं साथ ही हमें भी कृषि कार्य से समय मिल सकेगा । प्रेमा ने बताया कि अगर मेरा बड़ा बेटा पूरी तरह मेरा साथ दे तो मैं अपनी दूकान काफी आगे बढा सकती हूँ । उसने कहा जितने दिन लगातार दूकान चलाई है, मुझे पता नही चलता था कि मै कितना पैसा घर खर्च में उठाती हूँ लेकिन बीमारी के कारण जो पूंजी बचाई थी वह दवा में लग गई तथा कमजोरी भी बहुत आ गई ।

स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ाती महिलाएं

पैक्स परियोजना के तहत **दामिनी समिति शिवरामपुर** द्वारा महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधाराने एवं उनमें आत्मविश्वास पैदा करने को लेकर गाँव-गाँव स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया । इसी क्रम में ग्राम मछरिहा के मजरा भागापुरवा में माँ जानकी स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया । इस समूह में १० महिलाएं हैं । समूह की सभी महिलाएं डलिया बनाने का काम करती हैं । वैसे देखा जाए तो यह धन्धा इनके परिवार का बहुत पुराना है, लेकिन कुछ महिलाएं इसमें डलिया बनाना नहीं जानती थी, जो डलिया बनाना नहीं जानती थी वह भी डलिया बनाना सीख गई हैं । अतिया भी उनमें से एक है । इस समूह के सदस्यों की मांग है कि अगर हमें प्रशिक्षण मिल जाये तो हम कुर्सी स्टूल भी बना सकते हैं । समूह में एक महिला एक दिन में ५ से ७ डलिया बना लेती है । इनकी कीमत १० रु० से १५ रु० तक होती है । अधिकतर घर से लोग ले जाते हैं । लेकिन अधिक लाभ के लिए ये बहने अतर्रा, बांदा, खुरहण्ड, बबेरू भी बेचने जाती हैं तथा अनाज में देती हैं - जैसे १ डलिया ५ किलों गेहूँ में । वर्तमान स्थिति तो ज्यादा ठीक नहीं है लेकिन जब मौसम चलता है तो ज्यादा मांग होती है । इसी समूह की श्रीमती अतिया का कहना है कि भैंस के दूध से घी व खोवा बेंचकर उद्यम बढ़ाया जा सकता है । मैं एक भैंस रखकर स्वयं अपना कार्य करती हूँ इसे और आगे बढ़ाना चाहती हूँ । ऊषा का कहना है कि मेरी छोटी सी दूकान है जो समूह से मैने २०० रुपये लेकर खोला था । इस पर मेरे घर खर्च में बदलाव आया है । सड़क के किनारे दूकान होने के कारण चाय-पकौड़ी भी बनाना चाहती हूँ जिससे मेरी आर्थिक स्थिति और मजबूत हो जाए । लीलावती का कहना है कि महिलाओं के हांथ में पैसा आने लगे तो वह क्या नहीं कर सकती क्योंकि महिलाओं के हांथ में उनके परिवार व बच्चों का भविष्य होता है। हम स्वरोजगार की दिशा में प्रयत्नशील है ।

शंकरिया की कोशिश है कि उसके पति ड्राइवर की जगह सेठ बने

शंकरिया पत्नी चुन्नीलाल जाति-पाल अपने १ बेटी व १ बेटा के साथ पथरौड़ी में रहती है । शंकरिया ज्योति स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य है । इस समूह का गठन दिनाँक १६.७.२००३ को किया गया था । १० महिलाएं इसकी सदस्य हैं । चुन्नीलाल ट्रक ड्राइवर है, लेकिन वर्तमान समय में अस्वस्थ होने के कारण इनकी आर्थिक स्थिति बड़ी ही दयनीय है । समूह की बहनों एवं **दामिनी समिति, शिवरामपुर** के कार्यकर्ताओं ने शंकरिया को सलाह दिया कि अब तुमको कुछ करना चाहिए चाहे तो दूकान रखो या फेरी का काम शुरू करो, जिससे तुम्हारी परेशानी दूर हो । शंकरिया ने बैठक में किराना की दूकान रखने का प्रस्ताव रखा समूह ने प्रस्ताव पारित किया और शंकरिया को १०००/ रुपये का ऋण प्रदान किया । इस प्रकार शंकरिया ने माह अक्टूबर २००५ में दूकान रखी, दूकान धीरे-धीरे चल निकली । इनका कहना है कि दिन भर में ४०-५० रुपये तक की आय हो जाती है । स्वरोजगार के प्रति मेरा विश्वास बढ़ा है । अगर समूह का सी०सी०एल० हो जाता है तो मैं अपनी दूकान को बढ़ाकर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाऊँगी और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रयास करूँगी । मेरी कोशिश होगी कि मेरे पति ड्राइवर की जगह सेठ बनें ।

पहले नमक-माचिस खरीदने के लिए हलाकान थे,अब भैंस खरीदने की औक़ात बना ली

अन्त्योद संस्थान, सिसोलर पैक्स प्रोग्राम के तहत हमीरपुर जनपद के मौदहा ब्लाक की तीन न्याय पंचायतों सिसोलर, भुलसी तथा विहरका के पाँच मजरों सहित कुल २१ गाँवों में पंचायत सशक्तीकरण, महिला सशक्तिकरण तथा जनपैरवी को लेकर रचना तथा संघर्ष का कार्य कर रहा है ।पिछड़ा एवं उपेक्षित क्षेत्र होने के कारण महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय है । महिलाओं को चारदीवारी के अंदर घूँघट की क़ैद में रखा जाता था । इस स्थिति में समूहों का निर्माण करना एक कठिन चुनौती थी । किन्तु संस्थान ने लगातार प्रयास ज़ारी रखा, महिलाओं से बातचीत करने के लिए उनके परिवार के साथ पारिवारिक रिश्ते स्थापित किये । दलितों एवं अति पिछड़े परिवारों में संगठनात्मक भाव जगाकर संघ शक्ति के नारे से अवगत कराया । महिलाओं में बचत की भावना को प्रोत्साहित किया । कमज़ोर वर्ग की महिलयें संगठित हुई तथा समूह के माध्यम से नियमित बचत शुरू की । संस्थान द्वारा ऐसा प्रयास कार्य क्षेत्र के सम्पूर्ण गाँवों में अभियान के तहत चलाया गया । समूहों की नियमित बचत को परखते हुए भारतीय स्टेट बैंक मौदहा में बचत खाता खुलवाया गया। अब आवश्यकता थी समूह को वास्तविकता से अवगत कराने की । महिलाएँ मासिक बैठक में उपस्थित होने लगीं तथा एक दूसरे के दुख दर्द को समझने लगीं । उनमें भाव जगा कि हम दूसरे के दर्द को कैसे बाँटे । महिलाओं में ऐसी लालसा को देखकर उन्हें आपसी लेन-देन की प्रक्रिया से अवगत कराया गया कि समूह के बचतखाते से आन्तरिक ऋण उपलब्ध कराकर एक दूसरे की समस्याओं को हल किया जा सकता है। तत्पश्चात समूहों के आयवर्धन हेतु सी०सी०एल० करवाया गया भारतीय स्टेट बैंक सी०सी०एल० प्रक्रिया में समूह की कुल बचत का चार गुना दे रहा है। वर्तमान स्थिति यह है कि संस्थान द्वारा संचालित १५ समूहों को सी०सी०एल० प्रक्रिया से जोड़ दिया गया है, जिसमें ४ समूह क्रमशः कालका देवी स्वयं सहायता समूह भटुरी तथा काली देवी स्वयं सहायता समूह भटुरी, खेरापती स्वयं सहायता समूह भटुरी तथा जयगंगे, बड़ालेवा ने बैंक से पैसा निकाल कर बकरी, पालन भैंसपालन तथा मेलों में दूकान लगाना प्रारम्भ कर दिया है ।

स्वरोज़गार से जुड़ती महिलाएं

हमीरपुर जनपद के मौदहा ब्लाक की गणना अति पिछड़े एवं उपेक्षित ब्लाकों में की जाती है । इस पिछड़े क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति और भी बदतर है । आजादी के ५८ वर्ष बीत जाने के बाद भी इस क्षेत्र की महिलायें अपनी बात खुलकर कहने एवं स्वत्रन्त्र रूप से कार्य करने में अक्षम है । इस क्षेत्र की ग्राम पंचायत छानी के ग्राम भटुरी में महिलाएं इस कैदीय जीवन से निकल कर बाहर आ रही हैं । **अन्त्योदय संस्थान, सिसोलर** द्वारा इस क्षेत्र मे महिला सशक्तीकरण को लेकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए महिला स्वयं सहायता समूहो का गठन किया जा रहा है, जिसमें कालका स्वयं सहायता समूह भटुरी भी शामिल है । इस समूह का गठन दिनाँक ८ अक्टूबर २००३ को हुआ था । इस समूह मे हरिजन वर्ग की महिलाएं हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है । समूह की अध्यक्ष श्रीमती रज्जी तथा समूह की कोषाध्यक्ष श्रीमती राजकुमारी व सचिव श्रीमती गुमनिया है । गुमनिया की उम्र लगभग ५० वर्ष है । गुमनिया समूह को निरन्तर आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत है । इस समूह का बचत खाता भारतीय स्टेट बैंक मौदहा में खोला जा चुका है । इस बचत खाते में लगभग ८००० रुपये जमा है । बैंक के अधिकारियो द्वारा समूह की क्रेडिट लिमिट भी बना दी गयी है । गुमनिया ने बैठक में सभी महिलाओं से कहा कि हमें आत्मनिर्भर बनने के लिए स्वरोजगार की आवश्यकता है । प्रस्ताव लिखकर बैंक से १५००० रुपये निकाले गये जिसमें तय हुआ कि हमारे क्षेत्र में लगने वाले मेलों तथा तीर्थ स्थानों में प्रसाद जैसे नारियल, बतासा, लइया, अगरबत्ती आदि बेचने का काम किया जायेगा । इस व्यवसाय में समूह की सभी महिलाएं सहयोग करेंगी । गुमनिया के संरक्षण में इस व्यवसाय को शुरू कर दिया गया है । गुमनिया का कहना है कि इस व्यवसाय से हमें अपनी राह उज्जवल दिखायी दे रही है । परिपक्व हो जाने पर हम बैंक की मदद से किसी बड़े रोज़गार को करेंगी । इस छोटे से व्यवसाय से हमें काफी आमदनी हो रही है, जिसको लेकर समूह की सभी महिलायें काफी उत्साहित हैं । महिलाओं के इस सार्थक प्रयास को लेकर कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण के लिए यह एक शुभ संकेत है ।

स्वरोज़गार के साथ-साथ पंचायत के दायित्वों का सफलता पूर्वक निर्वहन करती हुई कमला

अन्त्योदय संस्थान मौदहा ब्लाक की तीन न्याय पंचायतों के सोलह ग्राम पंचायतों में पंचायत सशक्तिकरण, महिला सशक्तिकरण एवं जनपैरवी का कार्य अप्रैल २००३ से निरन्तर कर रहा है। चूँकि इन पंचायतों की भौगोलिक, सामाजिक, शैक्षिक स्थिति अत्यधिक दयनीय है इसलिये यहाँ पर आज भी दबंगों तथा सामंतशाहों का दबदबा कायम है। इन सभी स्थितियों-परिस्थितियों का शिकार क्षेत्र की भोली-भाली, गरीब दलित तथा पिछड़ी जनता है। किसी भी प्रकार के राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यों में इन दलित, पिछड़ी तथा महिलाओं की भागीदारी नगण्य रहती है। लेकिन संस्था द्वारा चलाये गये जागरूकता अभियान ने इन उपेक्षित, शोषित वर्ग को एक नयी दिशा प्रदान की जिसके परिणाम स्वरूप महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन हुआ। महिलाओं ने अपने अस्तित्व को समझा तथा सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में अपने को आगे लाने का सफल प्रयास भी किया है। इस बात का जीता-जागता उदाहरण है। २००५ के पंचायत चुनाव में गाँव गढ़ा से नवनिर्वाचित प्रधान श्रीमती कमला देवी। गढ़ा इस क्षेत्र का सर्वाधिक उपेक्षित गाँव माना जाता है क्योंकि यह गाँव केन नदी के तट पर बसा है। यहाँ तक पहुँचने के लिये किसी भी प्रकार का सम्पर्क मार्ग नहीं है। यहाँ के लोग चिकित्सा, शिक्षा, यातायात से पूरी तरह उपेक्षित हैं। महिलाओं को विशेष परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इन सभी बातों से प्रभावित होकर इस गाँव की एक पिछड़े समुदाय की महिला जो कि बेदमाता स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष भी है, उसने गढ़ा में ही चल रहे कुल ६ स्वयं सहायता समूहों से आपसी बैठक करके राजनैतिक हस्तक्षेप में आगे आने की विस्तृत चर्चा की। इस बैठक में अन्त्योदय संस्थान के कार्यकर्ताओं ने अपनी अहम भूमिका निभाते हुए पूरी तन्मयता से आगे बढ़ाने की बात पर बल दिया तथा समूह की महिला को प्रधानी के चुनाव में खड़े होने की बात पर जोर दिया इस पर कमला पत्नी राम सजीवन निषाद के नाम पर सभी समूहों के बीच सहमति बन गयी। यहाँ यह भी बताते चलें कि यह सीट पिछड़ी जाति महिला के लिये आरक्षित थी। कमला के विरोध में गढ़ा से ही रामकरण निषाद की पत्नी चुनाव मैदान में खड़ी हुयी चूंकि रामकरण निषाद की गणना इस गाँव में दबंग किस्म के लोगों में है जिसके कारण उसने चुनाव के दौरान सभी प्रकार के अनैतिक हथकंडे अपनाये लेकिन असफलता ही हासिल हुयी। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण रहा संस्था द्वारा वितरित की गयी मतदाता जागरूकता सामग्री तथा नुक्कड़ नाटक। संस्था द्वारा वितरित पोस्टरों में लिखे संदेशों तथा चित्रों ने आम मतदाताओं को जगाने का सफल प्रयास किया, साथ ही साथ समूहों की सभी महिलाओं ने एक साथ निकलकर घरों में जाकर अपनी प्रभावशाली बात कहती रही उन्होंने घर-घर जाकर कहा कि समाज में हमेशा से हमारा शोषण होता आया है अब हमने संगठित होकर कमला देवी को आगे किया है इनकी जीत हमारे समूहों की जीत होगी। इन सभी बातों का इतना प्रभाव पड़ा कि श्रीमती कमला निषाद को भारी जन समर्थन मिला और प्रधान पद को हासिल किया। कमला की जीत से सभी स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं में हर्ष व्याप्त हो गया। कमला निषाद ने अपनी जीत का मुख्य श्रेय अपने सभी समूहों की महिलाओं तथा अन्त्योदय संस्थान सिसोलर के सभी कार्यकर्ताओं को दिया। जीत के तुरन्त बाद कमला निषाद संस्था के कार्यालय में आयी और संस्था परिवार का आभार प्रकट किया तथा कहा कि मुझे हमेशा संस्था के सहयोग की आवश्यकता रहेगी। कमला ने समूह से १००० रुपये ऋण लेकर एक किराना की दूकान भी प्रारम्भ की है, कुछ पूंजी उन्होंने अपने घर से लगाई है। कमला की दूकान ठीक-ठाक चल रही है। उन्होंने पूरा पैसा ब्याज सहित समूह का वापस कर दिया है। वह अपनी दूकान में किराना सम्बन्धित सभी सामग्री रखती हैं। कमला बताती हैं कि प्रतिमाह दूकान से लगभग २००० रुपये की शुद्ध आय हो जाती है। कमला अपनी ग्राम पंचायत एवं ग्रामसभा का कुशल संचालन करते हुए अपनी किराना की दूकान में भी बैठने का कार्य कर रही हैं। गाँव की अनियमितताओं के खिलाफ आवाज उठाने का कार्य कर रहीं हैं। समूह को साथ-साथ लेकर पंचायत के दायित्वों का निर्वहन करती हैं। वह सभी दायित्वों को पूरा करते हुए चिनगारी संगठन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं।

सफेद साड़ी में समूह की महिलाओं के साथ कमला

काम के लिए दर-दर भटकने से मुक्ति मिली

श्रीमती रामबाई उम्र ३८ वर्ष, जाति-कोरी (अनुरागी) ग्राम-थुरट की निवासिनी हैं । रामबाई विगत २ वर्ष पहले **अरुणोदय संस्थान, महोबा** के सम्पर्क में आईं । संस्थान के कार्यक्रमो में इनकी प्रारम्भ से रूचि रही है । संस्थान से भली भाँति परिचित होने के बाद रामबाई ने संस्थान कार्यकर्ताओं के सहयोग से समूह का गठन किया जिसका नाम **सन्तोषी स्वयं सहायता समूह** रखा गया। रामबाई गाँव में ही या गाँव के बाहर जहाँ मजदूरी का काम मिलता, करने जाया करती थीं । अनेको बैठकों, प्रशिक्षणों में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही । इसी के फलस्वरूप रामबाई ने समूह से ५०० रुपये ऋण प्राप्त किया जो २ रू० प्रति सैकडा ब्याज पर था । समूह से पैसा प्राप्त करने के बाद रामबाई ने मऊ जाकर सब्जी, तराजू, बाट व डलिया खरीदा और घर पर ही दूकान के रूप में रख कर बैठ गयीं । इस प्रकार कुछ दिन बैठने के बाद रामबाई को अहसास हुआ कि हमारी सोच के अनुसार बिक्री कम हो रही है और सब्जी भी खराब होती जा रही है सो रामबाई ने डलिया मे सब्जी रख कर फेरी करने का काम किया जिस पर उन्हें सफलता मिली और आज भी रामबाई सुबह-शाम सब्जी की कमाई से बचत कर रही हैं और निर्धारित तिथि के आधार पर समूह का पैसा भी अदा कर दिया है ।

आज रामबाई २५ से ४० रुपये तक की प्रति दिन की बचत कर अपने परिवार का पालन पोषण कर रही हैं । रामबाई का कहना है कि पहले हम मजदूरी करने के लिए दर-दर भटका करते थे । आज हमें भटकने की जरूरत नहीं पड़ती । हम २५ रुपये कमाते है या ३० रुपये, हमें पहले की अपेक्षा यह काम ज्यादा पसन्द है ।

समूह के सहयोग से दूसरों की गुलामी से मुक्ति मिली

श्रीमती पार्वती उम्र ३६ वर्ष, जाति-अहिरवार, ग्राम-गंज की निवासिनी है । पार्वती विगत २ वर्ष पूर्व **अरुणोदय संस्थान, महोबा** के सम्पर्क में आयीं । तत्पश्चात ग्राम गंज मे ही **लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह** के नाम पर समूह गठन किया गया । इस समूह मे कुल २० महिलाएं सदस्य बनीं । प्रायः समूह की सभी महिलाएं मजदूरी कर अपना जीवन-यापन करने का काम किया करती थीं । परन्तु पार्वती की स्थिति कुछ अधिक ही नाजुक थी, जिस पर समूह की सभी महिलाओं की नजर थी। संस्थान की ओर से की जा रही बैठको, प्रशिक्षणों में बार-बार रोजगार से जुड़ने हेतु प्रोत्साहित करने पर पार्वती ने अपने समूह से २००० रुपये ऋण प्राप्त किया और छोटी सी किराना की दूकान प्रारम्भ की । पार्वती किराना की दूकान का सामान नजदीकी बाजार नौगाँव से स्वयं खरीद कर लायीं । प्रारम्भ में दूकान की प्रक्रिया, बिक्रीकरण की अनभिज्ञता के कारण पार्वती को थोड़ी बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा, परन्तु अब पार्वती पूरी तरह अपनी दूकानदारी में परिपक्व हैं । पार्वती बताती हैं कि गाँव की दूकान पर पैसा कम और अनाज अधिक प्राप्त होता है जिसे हम बाजार में बेंच देते हैं और कुछ आटा तैयार कर गाँव में बेंचते हैं तथा घर के उपयोग में भी यह अनाज काम आता है । पार्वती का कहना है की अब हम मजदूरी करने की अपेक्षा इस काम से ज्यादा खुश हैं । हमारी प्रतिदिन की मेहनत से ३० से ५० रुपये तक की बचत हो जाती है । आज पार्वती की इस छोटी सी दूकान में टाफी से लेकर पेन, पेंसिल तक बच्चों के काम मे आने वाली सामग्री उपलब्ध है, साथ ही घर के अन्य कामों मे आने वाली सामग्री तेल, साबुन आदि सभी चीजें हैं । आज पार्वती की दूकान मे लगभग ३५०० रुपये से अधिक का सामान उपलब्ध है और ऋण व्याज सहित समूह को समय से वापस भी कर दिया है ।

पंचायतों में अभिशाप बना अनुसूचित जनजाति होना

कबूतरा समुदाय के लोग जो कि वर्षों से जैतपुर विकासखण्ड की ऊबड-खाबड पहाड़ियों को आधार बनाकर खुले आसमान के नीचे घने जंगलों में रहकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं । वर्तमान सामाजिक परिवेश में सामाजिक, धार्मिक ठेकेदारों द्वारा हमेशा उन्हें अछूता माना जाता रहा है । पंचायतीराज व्यवस्था हो या प्रशासनिक सुविधा दोनो से इनका कोई सरोकार नहीं है । दबंगों एवं पुलिस के उत्पीड़न से ये लोग आदमी देखकर दूर भाग जाते थे । ऐसा ही एक वाक्या संस्था सदस्यों के साथ भी गुजरा । दिनांक २४.१२.२००४ को संस्थान द्वारा इनकी समस्याओं को मीडिया से रूबरू कराने के लिए पत्रकार भ्रमण का आयोजन किया गया । सायं ४ बजे पत्रकारों का दल जैसे ही इनके डेरे की ओर पहुंचा तो गोराताल डेरे के सभी लोग डेरा छोड़कर भागने लगे ओर महिलायें जोर-जोर से रोने लगीं । बाद में संस्थान साथियों के नजदीक जाने पर जब इनकी आपसी पहचान हुयी तब कबूतरा निकलकर सामने आये । अप्रैल २००३ से सघन रूप से संस्थान द्वारा इन्हें जगाने के प्रयास किये जा रहे थे । संस्थान द्वारा प्रशासन एवं मीडिया के साथ इनकी समस्याओ के सम्बन्ध में तो प्रयास जारी ही थे साथ ही संस्थान ने इनको समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अपने कार्यक्रमों में बुलाकर सभी के साथ उठना-बैठना एवं अन्य क्रियाकलापों में भाग लेने के अवसर प्रदान किये । संस्थान के इन सभी प्रयासों का ही परिणाम था कि जब २२ जुलाई २००५ को पंचायत चुनावों का विगुल बजा तो इन लोगो ने भी आगे आकर सक्रिय भागीदारी निभाने का साहस जुटाया और डेरे की सर्वसम्मति से रामकली पत्नी श्री अयोध या को चुनाव में प्रत्याशी के रूप में चुना गया । रामकली इस डेरे की प्रतिभावान महिला थी, उसने भी सभी के निर्णय को स्वीकारा और स्वयं के बल पर अपने चुनाव के नामांकन सम्बन्धी दस्तावेजों की तैयारी प्रारम्भ कर दी । वह २८ अगस्त, २००५ को जैतपुर के वार्ड नं० १५ में घर-घर जाकर घूमी और हरिजन हो या यादव सभी को उसने अपने डेरे के इस निर्णय से अवगत कराया और प्रत्याशी के रूप में प्रत्येक परिवार से लोगो को आगे आने का आह्वान किया किन्तु सभी ने उसी को आगे रहने का अवसर दिया । दिनांक ३०.७.०५ को विकासखण्ड मुख्यालय पर आरक्षण वार सूची आयी तो उसमें वार्ड नं० १५ अनुसूचित जनजाति महिला के लिए आरक्षित रखी गयी । तब तो रामकली की खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं रहा क्योंकि अब तो उसे निर्विरोध ही रहना था। किन्तु वह प्रशासन की ताकत से अनभिज्ञ थी क्योंकि प्रशासन का भी यही कहना था कि **''तू डाल-डाल तो मैं पात-पात''** लेकिन रामकली ने स्वयं पैरवी करके अपने दस्तावेज पूरे कराये। लेकिन जाति प्रमाण पत्र उसके और प्रशासन की गले की हड्डी बन गया। जाति प्रमाण पत्र प्रारूप लेकर जब वह तहसीलदार के पास पहुंची तो तहसीलदार आग-बबूला हो गया और रामकली को डराने धमकाने का प्रयास भी किया । दिनाँक २.८.०५ को जब संस्था के संज्ञान में यह बात आयी तो दिनांक ३. ८.०५ को संस्थान ने इस पर पैरवी प्रारम्भ की । उपजिलाधिकारी कुलपहाड़ को इस समस्या से अवगत कराया तो उपजिलाधिकारी ने तहसील के रिकार्ड मंगाये तो उसकी गार्ड फाइल में कही भी कबूतरों का नाम नहीं था अब संस्था को मुद्दा यह मिला कि जब गार्ड फाईल में अनुसूचित जनजाति का नाम ही नहीं तो सीट का आरक्षण जनजाति के लिए कैसे? इस पर जिलाधिकारी जी से फोन पर वार्ता की गई। जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी से रिपोर्ट मांगी तो तहसीलदार चूंकि एक वर्ष से कुलपहाड़ में विराजमान है तो उन्हें कुछ अधिक जानकारी थी, उन्होनें कहा कि जैतुपर में इस तरह के कोई व्यक्ति नहीं रहते हैं और तमाम दलीले देकर अपनी बात रखते हुए जिलाधिकारी को गुमराह कर दिया । तहसीलदार के इस प्रकार के नकारात्मक बयान से संस्थान को बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन संस्थान ने भी हिम्मत नहीं हारी और सभी कबूतरा परिवारों को एकत्र करवाकर जिलाधिकारी के सम्मुख प्रस्तुत होने को कहा क्योंकि तहसीलदार ने तो इन्हें जिन्दा ही मार डाला था लेकिन सायं ५ बजे प्रशासनिक दृष्टिकोण से जिन्दा मुर्दे कैम्प कार्यालय में इकट्ठा हुये तो इन्हें डाट-डपट कर भगा दिया गया, लेकिन ये लोग डटे रहे । यहां संस्थान ने जब जिला पंचायतराज अधिकारी से इस सम्बन्ध में बात की तो उन्होंने स्वीकारा कि वहां पर इस प्रकार के परिवार रहते थे इसलिए सीट का आरक्षण किया गया है। जिला पंचायतराज अधिकारी के इस वक्तव्य से जिलाधिकारी को अवगत करवाया गया तो जिलाधिकारी ने कहा कि फाईल में इनकी श्रेणी न होने के कारण प्रमाण पत्र नहीं बन सकते । लिहाजा वार्ड नं० १५ सीट को अनुसूचित जनजाति से अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित किया गया । कबूतरों के सामने फिर एक मार्ग दिखा क्योंकि इनके परिवार के कुछ लोगों के अनु०जाति के प्रमाण पत्र बने हुये थे। इन्हें फिर आशा की एक किरण दिखी और उसी प्रमाण पत्र के आधार पर रामकली के स्थान पर उसके लड़के किशुन का पर्चा डलवाया गया लेकिन भ्रष्ट प्रशासनिक कर्मियों ने जिलाधिकारी के आदेशों को ताक में रखकर आरक्षण श्रेणी में परिवर्तन की बात को यह कहकर नकार दिया कि हमारे पास लिखित आदेश नहीं है । इस पर जिलाधिकारी से मिलने का प्रयास किया गया तो चुनावी गर्मी इतनी बढ़ चुकी थी कि जिलाधिकारी महोदय ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया । इस प्रकार कबूतरा परिवारों ने तो अपनी जागरूकता के आधार पर पहल प्रारम्भ कर अपनी पृष्ठभूमि की बदलने के प्रयास तो प्रारम्भ कर दिये हैं लेकिन भ्रष्टाचारी दलदल वाला प्रशासन अभी इन्हें पचा नहीं पा रहा है।

लगन से जीविका का आधार मिला

श्रीमती जानकी देवी उम्र लगभग ३० वर्ष, जाति-कोरी (अनुरागी) ग्राम-बुधौरा की निवासिनी हैं । जानकी देवी ८/१२/०३ से जय माँ काली स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं । जानकी अपने गाँव में मजदूरी का काम किया करती थीं । इनके पति श्री भूपसिंह थोड़ी बहुत सिलाई का काम जानते थे । **अरुणोदय संस्थान, महोबा** के कार्यकर्ताओं के साथ अनेकों प्रशिक्षणों, बैठकों के बाद इनका मन मजदूरी को छोड़कर रोजगार की ओर आकर्षित होने लगा जिसमें समूह की महिलाओं ने इन्हें सिलाई के काम की सलाह दी परन्तु जानकी इस काम से पूरी तरह अनभिज्ञ थीं । इन्हें यह डर था कि हमसे कभी किसी का कपडा न बरबाद हो जाये और यह सोचती थी कि यह काम हमसे नहीं बनेगा परन्तु बार बार प्रेरित करने पर व इनके पति से बात करने व सिखाने की बात पर इनका उत्साह बढाया गया । जानकी की लगन व मेहनत रंग लायी। जानकी कुछ ही दिनों में महिलाओं की जरूरत के कई सामान बनाना सीख गयीं । जानकी ने प्रारम्भ में घर के ही फटे पुराने कपड़े सिले मशीन चलाना सीखा फिर फटे हुए कपडो से ही ब्लाउज, पेटीकोट आदि सामान बनाया, और जब पूरी तरह परिपक्व हुयी तो समूह की महिलाओं के कपड़े सिलना प्रारम्भ किया । आज जानकी समूह की महिलाओं के साथ साथ गाँव की भी महिलाओं के कपडे सिलती हैं । जानकी वर्तमान में ब्लाउज, पेटीकोट, फ्राक आदि कपडे सिलती हैं । इनकी प्रतिदिन की मेहनत २५ से ५० रुपये तक पड जाती है । आज जानकी अपने पति के साथ घर पर ही सिलाई का काम करती है । सिलाई की कमायी से अपना तथा अपने परिवार का भरण पोषण करती हैं, और अभी हाल ही मे २ माह पूर्व जानकी ने समूह से १०० रुपये ऋण लिया, जिससे मुर्गी के १६ बच्चे खरीदे । प्रारम्भ में देख भाल सही ढ़ंग से न कर पाने की वजह से मुर्गी के बच्चों मे कुछ बिल्ली ने खा लिये । अभी वर्तमान में इनके पास १३ बच्चे सुरक्षित है, जिनके रखरखाव की सारी व्यवस्था भी कर रही है । कच्चा अण्डा बिकता है, साथ ही वयस्क मुर्गी ७० रुपये से १०० रुपये तक की बिक जाती है और मुर्गा १५० रुपये का बिकता है इन्होने कहा आने वाले २ माह बाद हमारे मुर्गी के सभी बच्चे बडे हो जायेंगे जिससे हमे भरपूर फ़ायदा मिल सकेगा।

गुलाबरानी सब्जी व्यवसाय को सूत कातने से अच्छा मान रही है

श्रीमती गुलाब रानी पत्नी श्री गोपी, उम्र लगभग ३६ वर्ष , जाति-कोरी (अनुरागी) दरेरापुरा (जैतपुर) की निवासिनी हैं । गुलाबरानी गाँधी आश्रम मे सूत कातने का काम किया करती थीं जिसमे प्रति दिन की मजदूरी ५, ६ रुपये पड़ती थी । गाँधी आश्रम के बन्द हो जाने के बाद बेरोजगार गुलाबरानी मजदूरी कर किसी प्रकार अपने परिवार का पेट पालने लगी । दिनाँक १६/६/०३ को **अरुणोदय संस्थान, महोबा** की पहल पर दरेरा मुहाल मे गाँधी आश्रम के नाम पर स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया जिसमें सदस्य के रूप में गुलाबरानी शामिल हुईं । अनेको प्रकार के प्रशिक्षणों, बैठको के बाद संस्थान कार्यकर्ता साथियों ने इनका रूख स्वरोजगार की ओर मोड़ा जिसमें गुलाबरानी ने अपने समूह से ५०० रुपये २ रुपये प्रतिमाह प्रति सैकड़े की दर से ऋण प्राप्त किया, जिसमें टोकरी से लेकर तराजू वाट तक खरीदा फिर सब्जी मण्डी से आलू, प्याज, मूली, हरी मिर्च, हरी धनियां पत्ती आदि खरीद कर फेरी का काम प्रारम्भ किया । प्रारम्भ में अशिक्षा के कारण थोडी बहुत परेशानियो का सामना करना पड़ा परन्तु धीरे धीरे जानकारियाँ बढ़ी और बिक्री में भी बढोत्तरी होती रही। गुलाब रानी प्रारम्भ में १० से १५ रुपये ही कमा पाती थीं परन्तु आज ३० से ४० रुपये प्रति दिन कमा रही है ।

सब्जी खरीद दर			विक्री दर		
सामग्री	**वजन**		**सामग्री**	**वजन**	**विक्री दर**
आलू	५ किग्रा०	३० रुपये	आलू	५ किग्रा	३५ रुपये
मिर्च	५ किग्रा०	५० रुपये	मिर्च	५ किग्रा०	६० रुपये
भांटा	५ किग्रा०	१५ रुपये	भांटा	५ किग्रा०	२० रुपये
हरी पत्ती	१ किग्रा०	१० रुपये	हरी पत्ती	१०० ग्रा०	२ रुपये
मूली	१००	५० रुपये	मूली	१ मूली	१ रुपये

इसी प्रकार अन्य सब्जियो का भी रेट बिक्रेता या गुलाबरानी मण्डी के दर से स्वयं तय करती है और बेंचती हैं । आज गुलाबरानी स्वयं कहती हैं कि गाँधी आश्रम से ज्यादा फायदा हमें सब्जी फेरी मे मिल जाता है । मैं इतने पैसों में घर का सारा खर्च चला लेती हूँ और साथ में बची हुयी सब्जी घर के काम में भी आती है । वर्तमान में गुलाबरानी २० से २५ किलो तक सब्जी सर पर रख कर फेरी लगा रही है और इसी व्यवसाय से अपना तथा बच्चों का पालन पोषण कर रही हैं ।

मजदूरी से स्वयं का छोटा धंधा भला

श्रीमती शान्ती उम्र लगभग ३७ वर्ष, जाति-कोरी (अनुरागी) थुरट ग्राम की निवासिनी हैं । शान्ती पूर्व से ही मजदूरी का काम किया करती थीं, साथ ही इनके पति भी मजदूरी किया करते थे । पति तो आज भी मजदूरी कर रहे हैं परन्तु शान्ती घर के काम के साथ- साथ स्वयं रोजगार की ओर ज्यादा ध्यान दे रही है । **अरुणोदय संस्थान, महोबा** द्वारा तैयार किये गये सन्तोषी स्वयं सहायता समूह की सदस्य शान्ती सुबह, शाम टोकरी में रखकर तले हुये चावल के पापड़ बेचने का काम करती हैं । श्रीमती शान्ती ने अपने समूह से ५० रुपये ब्याज पर लिया, जिससे नजदीकी बाजार जैतपुर से ही कच्चे पापड़ को खरीदे तेल से तला और गाँव में ही चल रहे विद्यालय के बाहर बैठ गयीं । प्रारम्भ से ही बच्चों ने पापड़ का स्वाद पाते ही मात्र २ घण्टे में ही टोकरी खाली कर दी । पापड़ों की मांग को देखकर शान्ती का उत्साह बढ़ा और आगे सोच विकसित हुयी । धीरे- धीरे कुछ दिनों बाद शान्ती ने पापड़ फेरी का काम प्रारम्भ किया । शान्ती आज भी सुबह, शाम दो/दो घण्टे तले हुए पापड़ फेरी का काम करती हैं । उनका कहना है कि मै २५ से ३५ रुपये तक प्रति दिन कमा लेती हूँ । शान्ती चावल के पापड़ मऊरानीपुर से मंगाती है । १ किलो पापड़ में ७० पापड़ आते है जिसमें २५ रुपये का तेल खर्च होता है और ईधन में ५ रुपये का ईधन । इस प्रकार ३० रुपये के न्यूनतम खर्च में ४० का फायदा हो जाता है । शान्ती ने इस छोटे से व्यवसाय के माध्यम से मुर्गी पालन का भी कार्य प्रारम्भ किया है, जिसमें वर्तमान में इनके पास ८ मुर्गी के छोटे बच्चे हैं । शान्ती ने पापड़ व्यवसाय से ही ११ मुर्गी के बच्चे खरीदे जिसमे २ को नेवला खा गया । वर्तमान में ८ बच्चे सही सलामत है । शान्ती कहती है अगर ये बचे रहे तो १५० रुपये प्रति मुर्गा जायेगा और अब हमने इनके रख रखाव की भी व्यवस्था कर ली हैं । आज शान्ती पहले से बहुत ज्यादा खुश दिखाई पड़ती हैं ।

मनिहारी का व्यवसाय कर प्रेमवती सकून महसूस करती हैं

श्रीमती प्रेमवती उम्र लगभग ३६ वर्ष, जाति-कोरी (अनुरागी) ग्राम-कुडई की निवासिनी है । प्रेमवती अपने ग्राम कुडई व इर्द गिर्द के गाँवों में मजदूरी का काम किया करती थीं । परन्तु समय पर मजदूरी का काम नहीं प्राप्त हो पाता था । प्रेमवती इस स्थिति मे किसी तरह अपना जीवन व्यतीत कर रही थीं । **अरूणोदय संस्थान, महोबा** ने दिनाँक १५.१२.०४ को बगराजन स्वयं सहायता समूह का गठन इनके गाँव में किया, जिसमें प्रेमवती भी सक्रिय सदस्य के रूप में समूह से जुड़ी और सभी बैठकों में सहभागिता निभाने लगी । प्रेमवती ने अपने समूह से ऋण के रूप में १००० रुपये देने का प्रस्ताव रखा और समूह की सभी महिलाओं को अवगत कराया कि वह इस पैसे से मनिहारी/चूड़ी का व्यवसाय करना चाहती हैं । इस बात पर सभी ने स्वीकृत प्रदान की व समूह से २ रुपये प्रति सैकड़ा की दर से ब्याज पर १००० रुपये ऋण के रूप में दिया । प्रेमवती ने १००० रुपये का सामान खरीदा और घर पर छोटी सी दूकान डाल कर बैठ गयीं । स्थायी रूप से घर पर दूकान होने की वजह से गाँव में बिक्री उतनी नहीं हो पा रही थी जिससे वह दूकान को आग बढ़ा सकें या और अधिक धन अर्जित कर सकें । अतः प्रेमवती ने फेरी का काम प्रारम्भ किया जिसमें उन्हे और अधिक लाभ नजर आया और आवश्यकतानुसार बिक्री मे बढोत्तरी हुई । धीरे-धीरे प्रेमवती ने मेले आदि मे भी अपनी दूकान लगाने का काम प्रारम्भ किया और आज प्रेमवती अपने इस व्यवसाय से प्रसन्न हैं । प्रति दिन ४० से ५० रुपये के बीच की कमायी कर लेती हैं । साथ ही १००० रुपये से की गयी दूकान आज लगभग ५००० रुपये की हो गयी है और व्याज सहित समूह का धन भी वापस कर दिया है। प्रेमवती अपनी दूकान का सामान हरपालपुर, मऊरानीपुर से लाती हैं । वह प्रारम्भ से ही किसी एक दूकान से सामान नहीं खरीदतीं । खरीददारी स्वयं करती हैं और वही से सामान लेती हैं जहाँ पर इन्हें सस्ता मिल जाता है । आज इनकी दूकान में महिलाओं के उपयोग की सारी सामग्री उपलब्ध है ।

पाकोविस के प्रयास से पंचायतों में दाखिल हुए आदिवासी

चित्रकूट जिले के मानिकपुर ब्लाक का पठारी क्षेत्र जिसे ''पाठा'' के नाम से जाना जाता है, इसके अन्तर्गत लगभ ३० ग्राम पंचायते आती हैं । पठारी क्षेत्र होने के कारण यह क्षेत्र कभी प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर था । विशेषकर इस क्षेत्र में जंगल, एल्मोनियम पत्थर (बाक्साइड), जड़ी-बूटियाँ, लघुवन उपज, दुधारू पशुओं के लिए चारागाह एवं छोटी-छोटी नदियाँ, खेती करने योग्य भूमि थी जिसके कारण जंगल के किनारे-किनारे आदिवासी (कोल) बसे हुये हैं । परिस्थितियाँ धीरे-धीरे इनके विपरीत होती चली गईं । जंगल उजड़ गये, चारागाह की जगह खेती होने लगी । चालाक, होशियार लोग दूर-दूर से आकर यहाँ बस गये और इनकी जमीने छीनकर फर्जी रजिस्ट्री करवा ली । सम्पूर्ण संसाधन छिन जाने के बाद आदिवासी इन्हीं लोगों के यहाँ परिवार सहित बंधुवा हो गये । **अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान** की पहल पर लगभग ५००० कोल परिवारों को बंधुवा प्रथा से मुक्ति दिलवाकर उनके पुनर्वास का कार्य प्रारम्भ किया गया । लेखपालों को ले जाकर गाँव-गाँव में खतौनी पढ़वाना प्रारम्भ किया गया, उनकी जमीन बताना, फिर कब्जा प्राप्त करने हेतु प्रेरित करने का काम होता रहा । गाँव-गाँव में स्कूल चलाकर आदिवासियों के बच्चों को जोड़कर आदिवासियों को उनके अधिकार दिलाने हेतु **पाठा कोल अधिकार मंच एवं पाठा कोल विकास समिति का गठन किया गया** । मंच के माध्यम से भूमि माप एवं कब्जा अभियान चलाकर कई हजार एकड़ भूमि आदिवासियों सहित अन्य गरीब लोगों को भी नापकर कब्जा दिलवाई गई । इतने प्रयास के बावजूद भी अभी प्रत्येक गाँव में यह कह देना सहज नहीं था कि अब यह क्षेत्र समस्या विहीन एवं भूमि समस्या से रहित हो चुका है । चालाक-होशियार लोग अभी भी पलक झपकते ही आदिवासियों की जमीन पर कब्जा कर लेते हैं, जिसके कारण समिति को हर वर्ष भूमि समस्या से जूझना पड़ता है । पहले की अपेक्षा तो निःसंदेह काफी कमी आई है लेकिन बलात्कार, फर्जी ऋण, मजदूरी, राशन सामग्री का न मिलना, महिला उत्पीड़न, पुलिस उत्पीड़न, दस्युओं का कहर आदि तमाम तरह की घटनायें इस इलाके में आम बात हैं । कुछ बातें तो गांव से बाहर आ ही नहीं पातीं, जो आती भी हैं उनको प्रशासन लीपा-पोती करने में लग जाता है । ऐसी परिस्थिति में समिति को काफी दौड़-धूप एवं मशक्कत करनी पड़ती है । समिति का कुछ दायित्व गाँव में बंटे, गाँव स्वयं आगे आकर अपने गाँव की समस्या हल करे इसके लिए समिति पिछले एक दशक से प्रयासरत है । समिति ने इसके लिए पंचायत की ओर ध्यान केन्द्रित किया है । पंचायतों में यदि गरीब समुदाय का वर्चस्व होगा तो निश्चित ही समस्यायें घटेंगी । पिछले पंचायत चुनाव में समिति ने २० प्रत्याशी प्रधान पद हेतु लड़ाये थे जिसमें १४ प्रधान निर्वाचित हुये थे ।इस बार के पंचायत चुनाव में भी समिति ने २० प्रधान लड़वाये थे जिसमें १७ प्रधान निर्वाचित हुये हैं । यह समिति की सबसे बड़ी सफलता रही है । निर्वाचित प्रधानों में लगभग आधी संख्या महिलाओं की है । निश्चित ही सफलता समिति का हांथ मजबूत कर गरीब आदिवासी समूह को राहत प्रदान करेगी ।

"This document is output from a project funded by the Department for International Development (DFID), U.K. for the benefet of the developing conutries. The views expressed are not necessarily those of the Management Consultant or Department for International Development (DFID), U.K."

ABOUT AKHIL BHARTIYA SAMAJ SEWA SANSTHAN (ABSSS) CHITRAKOOT (U.P.)

Philosophy of ABSSS - ABSSS believes in ***Rachna*** (Creation) and ***Sangharsh*** (Non-Violence Struggle) to empower the most marginalised and exploited sections. Hence, ***"Antya Ka Uday"*** – Rise of the last has been the core developmental value statement of ABSSS by reflecting its meaning in all developmental interventions and initiatives to build a society where adivasis, dalits and women get equal opportunity (socially, economically and culturally) to live and work with dignity.

Vision of ABSSS- Our Vision is "to see a prosperous society where all have equality, access to social justice and opportunities for better livelihood."

Mission of ABSSS - "Advocacy and lobbying for the rights of adivasis and dalits and strengthen local institutions in the Bundelkhand Region to ensure self empowerment for Sustainable Development."

Goals and Strategies of the ABSSS

Goal 1 :To improve accessibility of tribal and dalits children and youth to basic education and livelihood skills respectively

Strategies

- *Support early age (FE, NFE) and adult education based on local environment and culture;*
- *Promote education based on human values, social cohesion and local culture;*
- *To widen the range of knowledge and understanding of the social, economic and political system in order to create a critical awareness about the environment;*
- *Increase employment generation skills and options among youths.*

Goal 2 :To minimise gender inequality and undertake proactive women empowerment initiatives

Strategies

- Effective redressal mechanism on women exploitation and atrocities against women;
- Promotion and strengthening of grassroots level women's organisations and networks to take up inequality and empowerment related issues;
- Increased participation of women in Gram Sabhas and PRIs;
- Increased access by women to easy credit for creation of productive assets and income generation opportunities;
- Increased access by women to basic health support services.
- To improve the health status of women and children of dalit, tribals and backward communities
- To ensure that people have access to better health, education and sanitation in villages.

Goal 3 : To improve the socio- economic and political conditions of the tribal and dalits and facilitate them to have increased control over natural resources and its optimal utilisation

Strategies

- Land and water resource management & development;
- Improve rain-water harvesting and percolation for improving agricultural productivity;
- Promotion of agro-based support services;
- Value addition to local natural resources and marketing options;
- Improve scope for inform income generating activities;

Goal 4 :To improve community participation in local planning and strengthen of PRIs for increased access to and use of developmental resources;

Strategies

- *Capacity building of Gram Sabhas and PRIs;*
- *Strengthening of Gram Sabha members for their active participation and decision-making in local governance process;*
- *Promotion of community managed village development information centres;*
- *Information dissemination on power of Gram Sabha and their role in mobilising resources for local area development.*

Goal 5 : To strengthen the civil society and improve their access over information and opportunities

Strategies -

- Strengthening of individuals, CBOs and networks to act as catalyst and pressure groups;
- Strengthening of local cadres and volunteers to identify and find solutions to address local problems effectively;

Goal 6: To promote and undertake necessary actions for protecting social justice and fundamental rights among tribal and dalits

Strategies -

- Situation assessment and documentation of ground realities to highlight violation and denial of social justice and fundamental rights;
- Network with local civil society institutions and strengthen alliance to identity issues in relation to human rights violations;
- Interface and exchange of information between the target groups and the government machinery;
- Public hearings between the effected families and concerned administration;
- Issue based campaign and lobbying at both micro and micro level for redressal;
- Highlighting of issues by using local media and various other mediums; and
- Legal support and facilitation to effected families in the form of taking up both individual and common cases with judiciary.

Goal 7 :To create a sustainable environment by influencing public policy at state level on pro-poor livelihood and human rights issues

Strategies

- Promotion of a human rights resource centre to act as human rights violation watch-dog and support centre;
- Awareness building and sensitisation among tribal and dalits about their fundamental right to livelihood;
- Issue based advocacy and lobbying of issues with government bureaucrats and legislative members;
- Policy advocacy to influence government policies on common issues;
- Public interest Litigations to draw attention of the judiciary for giving legal direction to concerned government machinery for action and policy change;
- Workshops and seminars on pro-poor livelihood support and human rights related issues in regular interval ;

Developmental Priorities - ABSSS has the following three development priorities that are core to its intervention process and on which other programme-wise thematic intervention issues are based to address widespread poverty and deprivation that is rampant in the targeted programme locations :

- Improvement and upliftment of Tribals & Dalits in the materials situation such as provision for minimum livelihood opportunities; opportunities for culturally sound and value based education; provision for basic health support & improved environment
- Human rights protection, advocacy & legal support to reduce social imbalance and inequality among tribal and dalits;
- Networking with like-minded civil society groups and make them proactive in addressing human rights and rural entitlement issues in Bundelkhand region;

Strategic Issues

- Developing of a long-term perspective action plan on Bundelkhand region in relation to livelihood issues, education, healthcare, sustainable agriculture, natural resource management, poverty, social exclusion and deprivation among tribals and dalits;
- Masco and Macro level Policy advocacy and intervention in relation violation of basic rights among tribal;
- Strengthening the local cadres, social entrepreneurs among dalits and tribal; and
- Networking with local civil society organisations and concerned citizens for identification critical iissues to undertake joint actions with object oriented focused programme interventions.